नेफा और लद्दाख

के साहसी वीरों की गाथाएँ

वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएँ

उमेश प्रकाशन
५, नाथ पार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

Nefa Aur Ladakh ke Sahasi Veeron kee Gathain

By

Birendra Mohan Raturi

Rs. 2.50

© उमेश प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक ● उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सडक, दिल्ली-६
मुद्रक ● प्रकाश प्रिंटिंग वर्क्स
लाल दरवाजा, दिल्ली
आवरण-मुद्रक ● सूबीज प्रेस
चावडी बाजार, दिल्ली
संस्करण ● द्वितोय
(१६६४)
मूल्य ● २.५०

यह दूसरा संस्करण

छः महीने की इस छोटी-सी अवधि में प्रस्तुत पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाशित करने में हमें अतीव प्रसन्नता हो रही है। पाठकों ने जिस तरह इस पुस्तक का स्वागत किया, वह हमारे लिए तो संतोष की बात है ही, साथ ही इससे यह भी स्पष्ट है कि देश में चीन के बर्बर आक्रमण के बाद कितनी तेजी से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई है।

पुस्तक की एक बडी विशेषता यह रही है कि इसका स्वागत हिन्दी क्षेत्र के साथ-साथ अहिन्दी क्षेत्र में भी हुआ। सुदूर असम से लेकर पंजाब और कश्मीर से कन्याकुमारी तक के जिज्ञासु पाठकों ने हमसे यह पुस्तक मँगाई है और लेखक को उनके सत्प्रयास के लिए धन्यवाद दिया है। मलयालम और तेलुगु भाषाओं में यह पुस्तक शीघ्र उपलब्ध हो जाएगी। अन्य भाषाओं में भी इस पुस्तक का अनुवाद प्रकाशित करने की व्यवस्था विचाराधीन है।
भारतीय नौसेना, वायुसेना, मध्य प्रदेश, पंजाब, दिल्ली प्रदेश आदि राज्यों एवं शिक्षा-विभागों में पुस्तकालयों के लिए यह पुस्तक स्वीकृत हो गई है। अन्य राज्यों तथा शिक्षा-विभागों में भी यह पुस्तक शीघ्र स्वीकृत हो जाएगी - ऐसी आशा है।

हम उन सभी विशिष्ट व्यक्तियों, राज्यों, शिक्षा विभागों और सुहृदय पाठकों के आभारी हैं, जिन्होंने हमें तथा लेखक को प्रशंसा के पत्र भेजे और हमारा उत्साह बढ़ाया और शीघ्र ही दूसरा संस्करण निकाल देने में हमारा साहस बढ़ाया। देश में संकटकालीन स्थिति रहे या न रहे, इन जवानों के अपूर्व बलिदान की कहानियाँ सदा प्रत्येक भारतीय को प्रेरणा देती रहेंगी और इस प्रकार का साहित्य स्थायी महत्व वा रहेगा।

- प्रकाशक

हमारा संकल्प

भारतीय जनता चीनी हमलावरों को देश की पवित्र भूमि से निकाल बाहर करने को वृढ़प्रतिज्ञ है, चाहे इसके लिए कितना ही लम्बा और कठोर संघर्ष क्यों न करना पड़े।

भारत के उपराष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसैन का सन्देश

VICE PRESIDENT
INDIA

NEW DELHI
४ सितम्बर १९६३

प्रिय महोदय,

आपके पत्र दिनांक २८ अगस्त १९६३ के साथ एक पुस्तक "नेफा और लद्दाख के साक्षी वीरों की गाथाएं" आपसे प्राप्त हुई। धन्यवाद।

नेफा और लद्दाख में हमारे सैनिक जवानों ने जिस दृढ़ता के साथ देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर किया है वह हमारे पारम्परीण इतिहास का द्योतक रहेगा। उनके साहस तथा वीरता का स्मरण कर सभी लोगों के दिलों में देश भक्ति की भावना जागृत होती है। मुझे विश्वास है कि आपकी यह पुस्तिका पाठकों में देश भक्ति की भावनाओं का संचार करने में समर्थ होगी।

शुभ कामनाओं सहित,

आपका,

जाकिर हुसैन

श्री वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी,
[illegible]
ऐड इन्फारमेशन बीरो,
आकाशवाणी भवन,
नई दिल्ली।

केन्द्रीय नागरिक परिषद की अध्यक्षा श्रीमती इन्दिरा गांधी का संदेश

PRIME MINISTER'S HOUSE,
NEW DELHI-11

दिनांक: ५-९-१९६३

"संदेश"

कश्मीर पर पाकिस्तानी हमले के बाद चीनी आक्रमण से हमारी स्वतंत्रता खतरे में पड़ी । आज़ाद भारत के सैनानियों का यह पहला अवसर है कि वे अपने देश के लिए लड़ रहे हैं । भारतीय सेना तो अपनी वीरता के लिए सदा ही मशहूर रही लेकिन यह आवश्यक है कि आज़ाद भारतीय सेनाओं की वीर गाथायें देश के प्रत्येक स्त्री, पुरुष तथा बच्चों तक पहुंचें ।

श्री वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी ने इन वीर गाथाओं का संकलन किया है जिसके लिए मैं इनको बधाई देती हूं ।

इन्दिरा गांधी

(इन्दिरा गांधी)

केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री यशवन्तराव चव्हाण का संदेश

रक्षा मंत्री
नई दिल्ली

दिनांक- १६ अगस्त १९६३

भारत का इतिहास त्याग, वीरता और आत्मबलिदान का इतिहास है। भारतमाता ने जिस प्रकार क्रांतिकारियों को जन्म दिया उसी प्रकार वीर पुरुषों को भी दिया। अक्टूबर माह में, जिस हिमालय ने संत्री बनकर हमारी आजतक रक्षा की, उसीने दुश्मन से ललकारा पाने के लिए, भारत के संतियों को पुकारा। इस युद्ध में अपनी वीरता का प्रदर्शन करनेवाले हमारे कुछ जवानों का परिचय, उनके प्रति आदर और उनकी प्रशंसा करने की दृष्टिसे उनकी वीरता, साहस और कर्तव्य परायणता की एक झलक, कहानियों के माध्यम से पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत करने के लिए ही लेखक ने नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएं" पुस्तक प्रकाशित करने का जो निश्चय किया है वह सचमुच सराहनीय है। मुझे आशा है, पाठक भी इसका स्वागत करेंगे।

मेरी शुभेच्छाएं

यशवन्तराव चव्हाण

समर्पण

___ देश के उन शूरमाओं को,

जिन्होंने भारत-माता के हिमकिरीट

धवल हिमालय को रक्त-रंजित करने

वाले आतताइयों को मार भगाने में

अपने प्राणों की बाजी लगा दी ___

विषय-सूचो

१. जाको राखे साइयाँ... -११

२. मौत के मुंह से -१८

३. शान्त झील के सीने में -२३

४. विश्वासघात -२९

५. सत् श्री अकाल -३४

६. बर्फ की समाधि -४२

७. यमदूतों के शिकंजे से -४८

८. अन्तिम सांस तक -५३

९. कर्त्तव्य को पुकार - ६१

१०. विजय उपहार -६६

११. मृत्यु से सामना -७०

१२. परिशिष्ट १ -७५

" २ -८०

" ३ -८२

"हमारी सेना के जवानों और अफसरों ने सीमा की रक्षा के लिए जो शौर्य दिखाया, उसकी सदन हार्दिक प्रशंसा करता है और जिन शहीदों ने मातृभूमि के सम्मान और अखण्डता की रक्षा के लिए जान दे दी है, उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है।"

(प्रधान मंत्री द्वारा ८ नवम्बर १९६३
को लोकसभा में प्रस्तुत किए गए
प्रस्ताव का एक अंश)

मेजर धनसिंह थापा, परमवीर चक्र

जाको राखे साइयाँ ..

माता धन्य हो उठी। उसने बग़ल में लेटे नवजात शिशु को सीने से लगा लिया और उसे बेतहाशा चूमने लगी।

कितना भाग्यशाली है यह बालक ! चमत्कार है ! जो व्यक्ति आग बरसाती अनगिनत आटोमैटिक राइफलों के बीच कूद पडा हो, वह जीवित है ! महान आश्चर्य !! शायद इसी बच्चे का सौभाग्य है, जिसने अपने पिता को दुश्मनों के बीच भी जीवित रखा। कौन जाने कभी यह बच्चा भी इसी प्रकार अपने वीर पिता के पदचिन्हों पर चलकर अपने देश के उज्ज्वल नाम को और भी उजागर करे। माता सोचती जाती और बच्चे को चूमती जाती ।

लगभग एक महीना पहले वह बहुत ही बेचैन थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि वह खुश होए या रोए। उसे इस बात का गर्व था कि उसके पति मेजर धनसिंह थापा ने अपने देश की सीमा की रक्षा करते हुए लद्दाख में बीर गति पाई है और उन्होंने जिस अदम्य साहस और युद्ध-चातुर्य से दुश्मन चीनियों के दाँत खट्टे किए, उसके लिए उन्हें परमवीर चक्र प्रदान किया गया है। परन्तु दूसरी ओर उसे एक चिन्ता भी खाए जा रही थी। वह गर्भवती थी और शीघ्र ही बच्चे की माँ बनने वाली थी। पिता के बिना इस शिणु का भविष्य क्या होगा, यही सोचकर वह फफक-फफक कर रो पडती थी।

लगभग एक महीने से यही क्रम चल रहा था। कभी अपने पति की वीर-गाथा को सुनकर वह गर्व से फूल उठती और कभी होने वाले बच्चे के भविष्य के बारे में सोचकर रो पडती।

...और भाग्य की बात देखिए। इधर अस्पताल में बच्चे ने जन्म लिया और उधर एक सप्ताह के अन्दर सूचना मिली कि मेजर थापा जीवित हैं और चीनियों की कैद में हैं।

माता धन्य हो उठी। वह बग़ल में लेटे नवजात शिशु को उठाकर उसे बेतहाशा चूमने लगी। कितना भाग्यशाली है यह बालक ! इसी के भाग्य

ने तो आज उसके सुहाग को भी क्रूर शत्रुओं के चंगुल में फँसने के बाद भी बचा दिया।

मेजर थापा अपनी गुरखा राइफल को एक छोटी-सी टुकडी के साथ लद्दाख की अग्रिम चौकी पर तैनात थे। अभी पौ भी नहीं फटी थी कि चीनी हमलावरों ने इस चौकी पर मोर्टार बम बरसाने शुरू कर दिए। सभी भारतीय सैनिक इस अप्रत्याशित हमले से चौंक उठे।

"रेडी," मेजर थापा ने कड्कती आवाज़ में आदेश दिया, "एक मिनट की भी देर न हो। दुश्मन के हमले का जवाब तुरन्त दिया जाए।"

और एक मिनट के अन्दर ही सभी जवानों ने खाइयों में कूदकर मोर्चा जमा लिया और दुश्मन पर गोलियाँ बरसाने लगे।

दुश्मन के बढ़ते कदम रुक गए। वे आड में दुबकने लगे। परन्तु जो काफी पीछे थे वे मोर्टारों से बम फेंकते रहे। इन बमों के कतरों से अनेक भारतीय सैनिक घायल होने लगे और अनेक काल के ग्रास बन गए।

"दुश्मन रुक गया है, लेकिन उसके पास लम्बी मार के हथियार हैं,"

मेजर थापा ने कहा, "उनकी मार को रोकना जरूरी है। आगे बढ़ना होगा।" अपने प्रिय कमाण्डर की सलाह सैनिकों के लिए ब्रह्मवाक्य के समान थी। वे चट्टानों और झाड्यिों की आड लेकर आगे बढ़ने लगे।

मोर्टार से गोलाबारी जारी थी, परन्तु जो चीनी सैनिक आगे आए थे, वे भारतीय सैनिकों को बढ़ता देख पीछे हटने लगे। भारतीय सैनिकों ने कुछ और आगे बढ़ने पर हथगोले भी बरसाने शुरू कर दिए। चीनियों के आगे मौत नाचने लगी। वे दुम दबाकर भाग खडे हुए।

"डरपोक कहीं के," एक सैनिक ने दाँत पीसते हुए कहा, "गोली से डर लगता था तो हमला करने आए ही क्यों ?"

मेजर थापा ने मुस्कराकर उस सैनिक की ओर देखा और कुछ अचकचाए।

"हैं ! तुम्हारे कंधे पर तो गहरा घाव हो गया है." मेजर थापा ने उसके कन्धे से बहते खून को देखकर कहा, "जाओ, वैण्डेज करा लाओ।" जवान हँस पडा, "ये तो हमारे मैडल हैं, कमाण्डर साहब ! लडाई

की यादगार हैं।"

यह कहकर उसने रूमाल निकाला और उसे आधा फाड़कर कन्धे के घाव में ठूंस दिया। फिर उसने कठिनाई से अपना दाहिना पैर मोड़कर बाकी रूमाल भी जाँघ पर बाँध लिया।

"तो तुम्हारी जाँघ पर भी गोली लगी है?" मेजर थापा ने पूछा।

"नहीं, मोर्टार का छोटा-सा टुकड़ा लग गया था," जवान ने हँसकर उत्तर दिया।

"कुल कितने घाव लगे हैं?" मेजर थापा ने जिज्ञासा प्रकट की। जवान ने गिनकर बताया, "अब तक ६ मैडल मिल चुके हैं।"

मेजर थापा उस जवान की ओर एकटक देखते रह गए, "जब तक तुम जैसे जवान हमारी सेना में हैं, तब तक कोई भी शक्ति हमारे देश का बाल तक बाँका नहीं कर सकती। चीनी तो किस खेत की मूली हैं।"

जवान के चेहरे पर संतोष की लहर दौड़ गई। उसका कमाण्डर उसकी वीरता की कद्र करता है। जब तक ऐसे अफसर हैं, तब तक सैनिक अपनी जान दे देंगे, पर आन नहीं जाने देंगे।

अभी मुश्किल से आधा घण्टा बीता था कि एकाएक मोर्टार बम फिर उनकी खाइयों के निकट आकर फटने लगे।

"सावधान," मेजर थापा ने हुंकार लगाई, "दुश्मन ने दूसरा हमला कर दिया है। इस बार एक भी जिन्दा वापस न लौटे।"

और सचमुच भारतीय सैनिकों ने दुश्मन पर कहर बरपा कर दी। दुश्मन भी संख्या में कम न था। अभी चीनी सैनिक हारकर भागे ही थे, परन्तु तुरन्त पीछे से कुमुक आ गई थी और अब उन्होंने हजारों की संख्या में आकर फिर से हमला कर दिया था। यही नहीं, बल्कि चीनी बहुत पीछे से लगातार मोर्टार बम बरसाते जा रहे थे।

पर क्या मजाल कि भारतीय सैनिकों ने चीनियों को एक भी कदम आगे बढ़ने दिया हो। खाइयों में लगातार बम गिर रहे थे और उनके कतरों से भारतीय सैनिक घायल होते जा रहे थे। अनेक मर भी गए थे।

मेजर थापा ने परिस्थिति भाँप ली। राइफलों से दुश्मन को मात नहीं दी जा सकती थी। वे इतनी दूर थे कि हथगोले भी नहीं फेंके जा सकते

थे। तब क्या किया जाए ? मेजर थापा की तीव्र बुद्धि ने तत्काल सोचा और फौरन कुछ सैनिकों को संकेत किया। सैनिक तैयार हो गए।

मेजर थापा उन सैनिकों को लेकर एक तरफ से दुश्मन की ओर बढ़े। काफी निकट पहुँचने पर उन्होंने हथगोले फेंकने शुरू कर दिए।

और दस मिनट में ही चमत्कार हो गया। दुश्मन की अनेक तोपें बेकार हो गईं, सैकड़ों चीनी मारे गए। पीछे से भारतीय सैनिक भी राइफलें लेकर आगे बढ़े।

हथगोलों और राइफल की गोलियों से चीनी त्रस्त हो गए। दुबारा वे फिर अपनी जान बचाकर भाग खड़े हुए।

मेजर थापा ने राहत की साँस ली और मुस्करा कर अपनी बगल में अधलेटे जवान की पीठ थपथपाई।

"तुम्हें भी शायद इस लड़ाई में काफी मैडल मिल चुके हैं," मेजर थापा ने जिज्ञासा प्रकट की।

"नहीं, साहब !" उस जवान ने उत्तर दिया, "अभी तो केवल चार ही मिले हैं और वे भी छोटे-छोटे।"

मेजर थापा की आँखों में स्नेह उमड़ आया। ऐसे हैं हमारे शूरमा, जिनसे वे भगोड़े चीनी लोहा लेने आए हैं।

एक हवलदार निकट आकर बोला, "साहब, आपका हुक्म हो तो आगे बढ़कर देख लें कि दुश्मन कितनी दूर भागा है। कौन जाने नई कुमुक लेकर आ रहा हो।"

"दुश्मन तो अब अपनी चौकी पर ही जाकर साँस लेगा। फिर भी देख आओ," मेजर थापा ने उत्तर दिया, "दुश्मन को देखकर तुरन्त लौट आना। ज्यादा होगा तो हम भी कुमुक मंगाएँगे। हमारे पास अब केवल २५ सैनिक रह गए हैं।"

"बहुत अच्छा," हवलदार ने कहा और चार सैनिकों को लेकर चल दिया।

वे कुछ ही आगे बढ़े थे कि मेजर थापा ने हिदायत दी, "खबरदार, सीमा से आगे न बढ़ना।"

लगभग १५ मिनट बाद हवलदार ने आकर सूचना दी कि दूर-दूर

तक दुश्मन का नामोनिशान तक नहीं दिखाई दे रहा है। सभी के चेहरों पर खुशी नाच उठी।

"सदर मुकाम को खबर दो कि घायल जवानों को अस्पताल पहुँचाने का प्रबन्ध किया जाय," मेजर थापा ने हवलदार को हिदायत दी, "और जो वीरगति को प्राप्त हो गए हैं, उनका पूरे सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार करने का प्रबन्ध किया जाए।"

लगभग दो घण्टे तक चारों ओर सुनसान रहा। भारतीय सैनिक अपने घायल और मृत सैनिकों को चौकी पर ले जाने में लगे रहे। किसी को भो इसका गुमान न था कि चीनियों ने पूरी तैयारी करके ही यह आक्र- मण किया है। वे हर हालत में किसी भी कीमत पर इस चौकी को लेने पर तुले हुए थे। उन्हें इसकी परवाह नहीं थी कि कितने चीनी सैनिक मारे जाते हैं; वे तो सिर्फ इतना चाहते थे कि चाहे हजारों सैनिक मारे जाएँ, पर यह चौकी अवश्य ले ली जाए ।

अतः दो घण्टे बाद ही वे भारी-भारी टैंक और दूर तक मार करने बाली तोपें लेकर चौकी पर चढ़ बैठे। वे हजारों की संख्या में थे और इघर भारतीय सैनिक केवल २२-२५ रह गए थे। लम्बी मार के हथियारों के आगे उनके हथगोले, हल्की मशीनगनें और और राइफलें बेकार थीं। तब भी मेजर थापा ने हिम्मत न हारी ।

"जवानो," मेजर गरजे, "हम जान दे देंगे, पर दुश्मन को आगे न बढ़ने देंगे। वह हमारी लाशों पर से होकर हो हमारी चौकी से आगे बढ़ पाएगा।"

अपने कमाण्डर की हुंकार सुनकर सैनिकों में जोश भर गया। उनकी धमनियों का रक्त खौलने लगा। हाथों में दुगुनी ताकत आ गई। वे एक बार फिर शत्रु से जूझने आगे बढ़े ।

उधर से चीनी सैनिक टैंक लेकर भारी तोपों से गोलाबारी करते चले आ रहे थे। भारतीय जवानों ने भी राइफलों से गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं। परन्तु उनकी गोलियाँ टैंकों पर लगतीं और छिटक जातीं। मेजर थापा दाँत पीस कर रह जाते। इधर काफी भारतीय सैनिक तोप के गोलों से समाप्त हो हुए थे ।

टैंक बढ़ते चले आ रहे थे और उनके पीछे-पीछे चीनी सैनिक। मेजर थापा सोच रहे थे, "काश ! ये टैंक न होते, तो एक-एक चीनी को भूनकर रख देते।" लेकिन अब किया ही क्या जा सकता था ? एक ओर थे आगे बढ़ते हुए हजारों चीनी और दूसरी ओर मेजर थापा के साथ ८-१० सैनिक।

चीनियों ने चौकी को चारों ओर से घेर लिया। अब मेजर थापा से न रहा गया। उन्होंने राइफल पर संगीन चढ़ाई और राम का नाम लेते हुए खाई से बाहर कूदकर चीनियों पर टूट पड़े। उनकी संगीन की मार से अनेक चीनी वहीं पर धराशायी हो गए। पूरी फौज क्षणभर के लिए उस वीर के कौशल को देखकर हतप्रभ रह गई।

और फिर एकाएक सब जंगबाज चीनी उस बहादुर मेजर पर टूट पड़े और उन्हें चारों ओर से दबोच लिया।

जिस परिस्थिति में मेजर थापा को दबोचा गया, उससे यही विश्वास किया जाता था कि वे जीवित न बचे होंगे, लेकिन 'जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय'; मेजर थापा मरे नहीं, वे जीवित हैं।

स्क्वाड्रन लीडर बधवार, वीरचक्र

और

फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट नारायणन, वीरचक्र

मौत के मुँह से

हेलिकाप्टर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। स्क्वाड्रन लीडर सूर्यकान्त बघवार की निगाहें सामने लगे बोर्ड पर घूमने वाली अनेक सुइयों पर टिकी हैं और कान फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट कुप्पुस्वामी लक्ष्मी नारायणन की ओर लगे हैं। नारायणन कभी दूरबीन से उन खामोश पहाड़ियों की ओर देख रहे हैं और कभी घुटनों पर फैले नक्शे की ओर।

लद्दाख की यह अछूती प्रकृति चीनी हमलावरों के मोर्टार गोलों और आटोमैटिक राइफलों की गोलियों से अपवित्र हो गई है। चारों ओर ऊँची- ऊँची पहाड़ियों से घिरी घाटी में नदी अत्यन्त तीव्र गति से वह रही है और उसके दोनों किनारों पर दूर तक फैली सफेद रेत यों लगती है मानो किसी ने चाँदी की चादरें बिछा दी हों। प्रकृति की छटा यहाँ अनुपम है। परन्तु आज प्रकृति की इस पवित्र ऊँचाई को दानवता ने लाँघ दिया है। जो स्थान कवि की कल्पना का रंगस्थल बनने के उपयुक्त था, उसे आज घोलेवाज चीनियों ने रणस्थल बना दिया है।

बधवार और नारायणन हेलिकाप्टर से अपकार चौकी की ओर जा रहे हैं। वहाँ भारतीय सैनिक चीनी हमलावरों से घिरकर खतरे में पड़ गए हैं। उन्हें सहायता पहुँचाना जरूरी हो गया है। वायुसेना के ये दोनों अधिकारी रात-दिन चीनियों की गोलियों का सामना करके अपकार चौकी के सैनिकों को सहायता पहुँचा रहे हैं। हेलिकाप्टर पर चीनियों ने अनेक बार गोलियाँ छोड़ी, जिससे उसमें कुछ खराबियाँ आ गई हैं, फिर भी सदर मुकाम के इंजीनियर और मकैनिक रातभर मरम्मत करके उसे किसी प्रकार उड़ने लायक बना देते हैं और तब बधवार तथा नारायणन तड़के ही उसे अपकार चौकी ले-जाकर वहाँ फँसे सैनिकों को सहायता पहुँचाते हैं। इन पहाड़ियों पर छाए घने कुहरे में केवल नक्शों और अनुमान के भरोसे ही वे चोकी तक पहुँचते हैं।

परन्तु आज हेलिकाप्टर का इंजन बीच में ही अजीब-सी आवाज करने लगा है। बधवार बार-बार इंजन के यन्त्रों को इधर-उधर मोड़कर ठीक करने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन इंजन की घड़घड़ाहट में कोई अन्तर नहीं आता।

"चौकी अभी कितनी दूर होगी ?" बघवार ने पूछा।

"अब नजदीक ही है," नारायणन ने दूरबीन से बाहर देखते हुए उत्तर दिया, "इस समय हम नदी के ऊपर हैं.....।"

अभी वे कुछ और कहने वाले थे कि थ्रोटल से किर्रर्रर्र की आवाज आई। नारायणन ने ऊपर से झाँका। बधवार ने फिर हत्था खींचा और बोर्ड पर लगी सुइयों पर निगाह डाली। गति बताने वाली सुई झटका दे-दे कर वापस लौट रही थी।

"इंजन खराब हो गया है," बधवार ने तेजी से कहा, "तुम पेट्रोल नापो और पंखे देखो।"

नारायणन अपने काम पर लग गए। बधवार ने एक बटन दबाया, दो-तीन पुर्जे घुमाए, हेलिकाप्टर को ऊपर ले जाने का प्रयत्न किया, पर सब बेकार।

"फोर्स लैण्डिग करनी पड़ेगी, स्थान देखो, "बघवार लगभग चिल्लाए। नारायणन ने तत्काल दूरबीन से चारों ओर देखा, "नदी का किनारा * ही एकमात्र स्थान है। बाएँ ले चलो।"

बघवार ने हत्था घुमाया। इंजन बाएँ को मुड़ा, पर साथ ही उसकी घड़घड़ाहट बढ़ गई। लगता था, हेलिकाप्टर अभी घरघराकर गिर पड़ेगा।

"तुम चाहो तो कूद सकते हो," वधवार ने जोर से कहा, "अब कोई चारा नहीं है। हेलिकाप्टर कभी भी गिर सकता है।"

"मैं नहीं कूदूंगा," नारायणन ने बधवार के निकट आते हुए कहा, "मुझे कॉकपिट पर आने दो।"

"ठहो, तुम उसे दबाओ," बधवार ने एक यंत्र की ओर इशारा करके कहा।

नारायणन ने उसे दबा दिया; इंजन ने आवाज बदली पर हेलिकाप्टर

तेजी से गिरने लगा। "कुछ और बाएँ बस, अब नीचे करो," नारायणन ने नीचे देखते हुए कहा।

बधवार पूरी शक्ति से हेलिकाप्टर को संतुलित करने का प्रयत्न करने लगे।

"बस जमीन आने वाली है, सावधान!" नारायणन चिल्लाए, "वार खींचो।"

और हेलिकाप्टर जमीन से टकराकर झटके के साथ रुक गया। दोनों की आँखों में खुशी नाच उठी। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और कसकर हाथ मिलाया।

दोनों ही सुरक्षित जमीन पर उतर आए।

दोनों ने इंजन की जाँच की और उसे ठीक किया। हेलिकाप्टर फिर काम लायक हो गया।

बधवार ने कहा, "इस समय यहाँ से हेलिकाप्टर ले जाने में खतरा भी है। ऊपर पहाडी पर दुश्मन है। यदि हेलिकाप्टर फिर बिगड गया तो सैनिकों को मदद पहुंचाना कठिन हो जाएगा। आओ, घाटी के रास्ते ही चलें। वहाँ से सैनिकों को लाकर यहीं से लें जाएँगे।"

"चलो," नारायणन ने कहा।

दोनों ने चौकी के सैनिकों के लिए प्राथमिक चिकित्सा का सामान और अन्य आवश्यक चीजें अपनी पीठ पर लादीं और घाटी की ओर चल दिए।

वे मुश्किल से एक फर्लांग जा पाए थे कि उन्हें चोटी पर कुछ लोग दिखाई दिए। बधवार ने दूरबीन से उधर देखा। वे चीनी सैनिक थे और उनका अफसर दूरबीन से उनकी ओर देखकर उन्हें आत्मसमर्पण का इशारा कर रहा था। कुछ चीनी सैनिक तेजी से पहाडी से उतरकर घाटी की ओर आ रहे थे।

बधवार ने कहा, "दुश्मन ने हमें देख लिया है। २०-२५ सैनिक इधर ही आ रहे हैं। उनका अफसर हमें आत्मसमर्पण करने का इशारा कर रहा है।"

"हम आत्मसमर्पण नहीं करेंगे, भले ही मर जाएँ," नारायणन हैं कहा, "चलो हेलिकाप्टर को बचाएँ, वरना वह दुश्मनों के हाथ पड जाएगा।"

"चलो," बघवार ने कहा और दोनों तेजी से हेलिकाप्टर की ओर भागे। सौभाग्य से वे भी अभी दुश्मन की गोलियों के रेंज से बाहर थे।

हेलिकाप्टर पर चढ़कर उन्होंने दूरबीन से देखा कि २०-२५ चीनी काफी निकट आ पहुँचे हैं। दो मिनट के अन्दर ही वे इतने नजदीक आ जाएँगे कि उनकी गोलियों से हेलिकाप्टर नष्ट हो सकता है।

बधवार ने फौरन हेलिकाप्टर चालू कर दिया। नारायणन ने उन्हें सहायता दी और एक मिनट में ही हेलिकाप्टर घर्र-घर्र करता हुआ धीमे- धीमे ऊपर उठने लगा।

बधवार ने मुस्कराकर नारायणन की ओर देखा। नारायणन ने दूरबीन से देखा - हेलिकाप्टर जमीन से काफी ऊपर उठ चुका है और चीनी सैनिक नीचे ठगे-से हेलिकाप्टर को उड़ता देख रहे हैं।

"हे भगवान, तुम्हारा लाख-लाख धन्यवाद। आखिर हमने अपना हेलिकाप्टर बचा ही लिया," फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट नारायणन ने संतोष की साँस लेकर कहा और स्क्वाड्रन-लीडर बघवार के निकट आकर बैठ गए।

लाँसनायक राघवन, वीरचक

शान्त झील के सीने में

याँगक्रोंग-सी झील की सर्वदा शान्त और मौन लहरों में आज अचानक अनगिनत तूफ़ान मचल उठे थे। जो झील युग-युग से बर्फानी तूफ़ानों के घनघोर गर्जन और उस गर्जन की पहाडों से टकराकर आने वाली गूंज को सदैव अपनी शान्त तरल लहरों में आत्मसात् करती रही, उसी की लहरें आज भीषण गोलाबारी को अपने विशाल वक्ष पर झेलती हुई अनोखी ध्वनि पैदा कर रही थीं। किसे मालूम था कि लद्दाख की यह शान्त झील भी कभी इस तरह आक्रान्ताओं के हाथों रौंदी जाएगी ? परन्तु जिस बात की हम स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर पाते, वह बात भी कभी-कभी प्रत्यक्ष हो जाती है। हमने कब सोचा था कि चीन कभी हमें धोखा देगा ? परन्तु उसने दिया। जिस तरह हमे धोखे में रखकर उसने विशाल आक्रमण किया, उसे क्या यों ही भुलाया जा सकता है ?

तो आज यौगक्राग-सी झील अशान्त थी। उसके सीने पर लगातार गोलियों की बौछार हो रही थी और उस बौछार स बचती हुई दो नावे डगमगाती हुई बढ़ी चली जा रही थी। कोई गोली सन्न-से पानी में घुस जाती, काइ खट-से नाव से आ टकराती और कोई खप से नाव में बैठे किसी संनिक के शरीर में घुस जाती। अजीब भयावह दृश्य था ! झील के किनारे चट्टानों की आङ में छिपे सैकडों चीनी लगातार प्रयत्न कर रहे थे कि नावे दूसरे किनारे तक न पहुँच पाएँ और बीच झील में ही डूब जाएँ। इधर नाव में बैठे भारतीय सैनिकों का प्रयत्न था कि किसी प्रकार झोल पार कर लें।

इंजीनियरी कोर का लाँसनायक राघवन कभी अपनी नाव चलाने बाले को कुछ आदेश देता और कभी चिंतित होकर दूसरी नाव पर दृष्टि डालता। सैनिकों को इन नावों से पार ले जाने की जिम्मेदारी उसी पर थी।

गोलियों की बौछार से दोनों नावें काफी टूट-फूट चुकी थीं। उनमें

तेजी से पानी भरता आ रहा था और सैनिक मिलकर पानी उलीच रहे थे, ताकि नाव में पानी न भर जाए। दूसरी नाव का अगला भाग गोलियों से टूट चुका था और सैनिकों के पूरा जोर लगाने के बाद भी नाव में पानी भरता जा रहा था।

"ओह, नाव डूबने वाली है।" राघवन ने उधर देखकर कहा, "इसे उधर ले चलो।"

नाव चलाने वाले ने राघवन की नाव को दूसरी नाव की ओर मोड़ दिया, परन्तु अभी यह नाव पूरी तरह मुड़ी भी न थी कि दूसरी नाव डूब गई और सैनिक डूबने-उतराने लगे। एकाएक राघवन खड़ा हो गया।

"राघवन, क्या कर रहे हो ?" एक सैनिक ने चिल्लाकर कहा, परन्तु उसकी बात सुनने से पहले ही राघवन झील के उस बर्फानी पानी में कूद-कर डूबने वाली नाव की ओर बढ़ चुका था।

डूबने वाली नाव में जो तैरना जानते थे वे तो किनारे पहुँचने का प्रयत्न करने लगे और बाकी हाथ-पैर पीटने लगे।

"लगता है अब कोई नहीं बचेगा," इस नाव के एक सैनिक ने कहा, "पानी की ठंड से सबके जिस्म अकड़ जाएँगे। क्या क्रिया जाए !"

"देखो," पहले सैनिक ने जोश में आकर सामने की ओर इशारा किया।

सबने देखा, राघवन बाएँ हाथ से एक बेहोश सैनिक की कमर पकड़ कर और दाएँ हाथ से पानी काटता हुआ नाव की ओर आ रहा है। खुशी से सबकी आँखें चमक उठीं। नाव के निकट आने पर दो सैनिकों ने हाथ बढ़ाकर बेहोश सैनिक को नाव में खींच लिया।

"राघवन, अधिक खतरा मत उठाओ," एक सैनिक ने कहा, परन्तु उसकी सलाह सुनने के लिए राघवन वहाँ नहीं रुका। वह फौरन दूसरे सैनिक को बचाने चल दिया।

कुछ देर बाद वह दूसरे सैनिक को भी बचा लाया।

राघवन इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह सैनिकों के बार-बार रोकने पर भी फिर चल दिया। काफी मेहनत करने के बाद उसने तीसरे

को भी बचा लिया।

"अव अधिक खतरा उठाना सम्भव नहीं," नाविक ने सलाह दी, "इस नाव में भी बडे-बडे छेद हो चुके हैं और बोझ काफी बढ़ गया है।"

राघवन बहुत थक चुका था। उसकी साँस फूल रही थी और आँखें बार-बार बन्द हो रही थीं। उसने थकान के मारे जोर से आंखें मींचते हुए पूछा, "और अन्य साथी ? उनका क्या होगा ?"

"साहब, हमारी नाव दुश्मन का निशाना बनी हुई है। अगर जरा भी देर हो गई तो हम सब यहीं डूब सकते हैं। नाव भो बहुत डगमगा रही है," नाविक ने नम्रता से उन्हें समझाया।

"तो चलो," राघवन ने लम्बी साँस छोडते हुए एक सैनिक के कन्धे पर सिर टिकाकर कहा।

नाव आगे बढ़ने लगी और कुछ ही देर बाद मौत के मुँह से सही- सलामत बचकर सुरक्षित स्थान पर पहुँच गई।

परन्तु राघवन अब भी चिन्तित था। पहली चौकी पर जो सैनिक रह गए, उनका क्या होगा- यही चिन्ता उसे बार-बार खाए जा रही थी। रातभर वह इसी चिन्ता में सो भी न सका।

सुबह होते ही उसने अपने एक साथी से कहा, "देखो, मैं पहजी चौकी से सैनिकों को लाने जा रहा हूँ। तुम इधर का ध्यान रखना।"

"नायक साहब, दुश्मन चारों ओर फैला हुआ है," साथी ने कहा "इस समय झील पार करना मौत के मुँह में जाना है।"

"हाँ, खतरा तो है, लेकिन यह नहीं हो सकता कि हम अपने साथियों को दुश्मन के बीच असहाय छोड दें। मुझे जाना ही होगा" राघवन वे उत्तर दिया और नाव की ओर बढ़ गया।

"नायक साहब, मैं भी आपके साथ चलता हूँ," साथी ने उसके पीछे- पीछे चलते हुए कहा।

"नहीं," राघवन ने नाव को पानी में धकेलते हुए कहा, "मैं अकेला ही जाऊँगा। तुम यहाँ की देख-रेख करो।"

साथी अवाक् खडा रह गया। राघवन नाव में कूदकर उस ओर

खेने लगा, जिधर पहली चौकी थी।

साथी ने देखा, नाव तेजी से चौकी की ओर बढ़ी चली जा रही है। उसका दिल धक-धक कर रहा था। चारों ओर खामोशी छाई हुई थी। वह जानता था कि इस आवाज को चीनी सैनिक भी अवश्य सुन लेंगे और तब वे उस पर गोलाबारी करने से नहीं चूकेंगे। तब क्या होगा ? वह बार-बार ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि नाव की आवाज दुश्मन के कान तक न पहुँचे ।

नाव चौकी के काफी निकट पहुँच चुकी थी। दुश्मन ताक में था ही; उसने फौरन गोलाबारी शुरू कर दी। राघवन गोलियों की बौछार के बीच चतुराई से नाव खेता चला गया और अन्त में चौकी पर पहुँच गया ।

चौकी पर सात सैनिक थे। वे खुशी के मारे राघवन से लिपट गए।

"चलो, एक भी मिनट नहीं खोना है," राघवन ने उन्हें सचेत किया, "खतरा बढ़ रहा है।"

"चलो-चलो," सैनिकों ने कहा और बारी-बारी से नाव पर सवार हो गए।

"सब परमात्मा का स्मरण कर लो। दुश्मन को हमारा पता है। जान हथेली पर है। मौका आने पर नाव से कूदना भी पङ सकता है." राघवन ने कहा।

सैनिकों ने राइफलें भरकर उस ओर तान ली, जिधर दुश्मन के होने की सम्भावना थी। राघवन तेजी से नाव बढ़ाने लगा। लेकिन अभी वे कुछ ही दूर जा पाए थे कि दुश्मन ने गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं।

राघवन ने फौरन नाव का रुख बदल दिया और चिल्लाकर कहा, "अन्दाज से दुश्मन की ओर बौछार शुरू कर दो। वह सिर न उठाने पाए। वरना हमें देख लेगा।"

राघवन का इतना कहना था कि सैनिकों ने धुआँधार गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं। कोई भी चीनी गर्दन न उठा सका। नाव तेजी से बढ़ती चली गई और अन्त में दुश्मन की गोली के रेंज से बाहर हो गई।

राघवन ने राहत की साँस ली, "बस मेरा कर्त्तव्य पूरा हो गया। अब अगर मुझे गोली लग भी गई तो कोई गम नहीं।"

"राम क्यों नहीं," एक सैनिक ने उसे टोका, "इस बार तो हमें चौकी छोड़कर आना पड़ा है। लाचारी थी। लेकिन अभी तो आपको इसी तरह हमें फिर चौकी तक ले जाना पड़ेगा, शत्रु का मुकाबला करने के लिए।"

"हाँ, यह तो पहली मुठभेड़ थी," दूसरे सैनिक ने कहा, "अगर चीनी इसी तरह हमला करते रहे तो आप जैसे वीर नाविक ही फिर मोर्चे पर पहुँचा सकेंगे।"

राघवन ने मुस्कराकर थकी निगाहें उन सैनिकों पर डालीं, जो मौत के मुँह से बचकर आने के बाद अब मन-ही-मन राघवन की दीर्घायु के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

ब्रिगेडियर होशियार सिंह

विश्वासघात

"साहब, आप कुछ देर आराम कर लें। दस दिन से आपने पलक तक नहीं झपकी," हवलदार मेजर ने झिझकते हुए कहा।

"नहीं, अभी आराम का समय नहीं है, हवलदार!" ब्रिगेडियर होशियार सिंह ने हवलदार के कंधे पर हाथ रखकर उत्तर दिया, "दुश्मन सिर पर है। उसे अपनी भूमि से बाहर निकालने के बाद ही हम आराम कर सकते हैं।"

"लेकिन साहब, इस तरह रात-दिन एक पाँव पर कब तक खड़े रहा जा सकता है," हवलदार ने भरसक समझाने का प्रयत्न करते हुए कहा, "दुश्मन को हम नाकों चने चबवा चुके हैं। वह बेहद धवराया हुआ है। वह अभी फिर एकाएक हमला करने की हिम्मत नहीं कर सकता। और यदि उसने कर भी दिया तो हमारे सैनिकों की अचूक गोलियाँ खाते ही वह फिर सिर पर पैर रखकर भाग खड़ा होगा। फिलहाल वह चुप है। तब तक आराम कर लें।"

"मेरे नौजवान दोस्त, "ब्रिगेडियर ने उसके कंधे थपथपाते हुए कहा, "सिपाही को जिन्दगी में जब वीरता, साहस और सूझबूझ दिखाने का मौका मिलता है, तब उसे जरा भी गफलत नहीं दिखानी चाहिए। अगर हमसे जरा भी चूक हो गई तो हमारा देश, जिसकी स्वतन्त्रता की रक्षा का भार हम पर है, हमारे बारे में क्या कहेगा ?"

हवलदार चुप हो गया। एक ओर हजारों चीनी सैनिकों के हमले की आशंका और दूसरी ओर निरंतर दस दिन से जागा हुआ उनका कमाण्डिग अफसर। हवलदार क्या करे !

ब्रिगेडियर होशियार सिंह भारतीय सेना के माने हुए अफसर थे। वे अठारह वर्ष की उम्र में सिपाही की हैसियत से भरती हुए थे और अपनी

अभूतपूर्व सेवाओं, परिश्रम, सूझबूझ, अदम्य वीरता और साहस के बल पर अब ब्रिगेडियर के पद पर पहुँच गए थे। दूसरे विश्व युद्ध में उन्हें 'इण्डियन आर्डर आफ मेरिट' और 'इण्डियन डिस्टिंग्विश्ड सर्विस मैडल मिल चुके थे।

अब (२६ अक्टूबर १६६२) वे सेला में बासठवें इंफैंट्री ब्रिगेड को कमान संभाले हुए थे और पिछले दस दिनों से उन्होंने एक पलक तक नहीं झपकी थी। उन्होंने इतनी चतुराई से मोर्चाबन्दी करवाई थी कि चीनी सैनिक हजारों की संख्या में आकर हमला करने के बावजूद भी युद्ध में नहीं टिक पाए थे।

हवलदार को अब भी चिन्तित देखकर ब्रिगेडियर ने मुस्कराकर कहा, "हवलदार ! इस समय हमारे सामने केवल एक ही चिन्ता होनी चाहिए और वह है-दुश्मन को अपनी मातृ-भूमि से बाहर भगाना। हमारे देश पर दुश्मन ने धोखे से हमला किया है और हम सब भूख-प्यास, नींद भुलाकर पिछले दस दिनों से मोर्चे पर डटे हुए हैं। ऐसी हालत में हम में से कोई भी गहरी नींद कैसे ले सकता है ? और जब तक मेरे जवानों को आराम नहीं मिलता, तब तक मुझे आराम करने का कोई हक नहीं है। खैर, चिन्ता की कोई बात नहीं है, मैंने कुमुक मंगवाई है और कुमुक के आते ही हम लोगों को कुछ राहत मिल जाएगी ।

खुशी से हवलदार की आँखें चमक उठीं, "साहब, मुझे पूरी उम्मीद है कि जल्दी ही कुमुक आ जाएगी। तब आप यहीं से आदेश देते रहना और हम सब दुश्मन को सीमा पार खदेड आएँगे ।"

परन्तु ब्रिगेडियर और हवलदार का अनुमान गलत निकला। ६ नवम्बर को चीनी सेना ने वालोंग क्षेत्र पर हमला कर दिया और १५ नवम्बरको उस क्षेत्र की अनेक चौकियों पर एक साथ भीषण गोलाबारी शुरू कर दी। ऐसी दशा में कुमुक का पहुँचना असम्भव हो गया। फिर भी ब्रिगेडियर और उनके सैनिकों ने दुश्मन को एक भी कदम आगे नहीं बढ़ने दिया ।

१८ नवम्बर को चीनियों ने बोमदी ला और सेला के बीच की

सड़क काट दी और १६ नवम्बर को सेला के मुख्य दर्रे तथा बोसदी ला पर कब्जा कर लिया। इससे ब्रिगेडियर की सेना बाकी भारतीय सेना से बिल्कुल अलग कट गई और दुश्मनों से घिर गई। फिर भी ब्रिगेडियर की सेना पूरी शक्ति से दुश्मन का मुकाबला करती रही।

उधर चीनी सेना के अधिकारी इतनी विजय प्राप्त करने के बावजूद भी समझ गए कि भारतीय जवानों से मोर्चा लेना खेल नहीं है। अचानक हमला करके भले ही वे कुछ आगे बढ़ गए हों, परन्तु भारतीय सैनिक पहला धक्का खाने के बाद सँभलते ही इतने जोर का प्रत्याक्रमण करेंगे कि चीनियों को मुंह छिपाने की भी जगह नहीं मिलेगी।

और जब तक भारतीय सेना पहले के अचानक धक्के से सँभली और प्रत्याक्रमण के लिए तैयार हुई, चीनी अधिकारियों ने २० नवम्बर को अचानक युद्ध बन्द करने की घोषणा कर दी।

दुश्मन से बदला लेने के लिए बेताब भारतीय सैनिक मन मसोसकर रह गए।

ब्रिगेडियर होशियार सिंह अपने बचे हुए २०० सैनिकों को लेकर सदर मुकाम की ओर रवाना हो गए। युद्ध-विराम की घोषणा हुए ६ दिन हो चुके थे और युद्ध समाप्त हो चुका था। परन्तु २७ नवम्बर को ब्रिगे- डियर होशियार सिंह जब अपने सैनिकों के साथ देराँग-जंग की सड़क के एक मोड़ पर ही थे, तभी चीनी सैनिकों ने अचानक तीन ओर से उन पर हमला कर दिया। ब्रिगेडियर ने स्वप्न में भी इस हमले की कल्पना नहीं की थी। अब उनके पास आत्मसमर्पण के अलावा और कोई रास्ता नहीं रह गया था। अतः ब्रिगेडियर और उनके सैनिकों ने आत्मसमर्पण के लिए हाथ ऊँचे कर दिए।

तभी एक चीनी अफसर आगे बढ़ा और उसने राइफल तानकर निहत्थे ब्रिगेडियर होशियार सिंह पर गोली चला दी। ब्रिगेडियर वहीं गिर पड़े।

यह धोखेबाज़ी देखकर भारतीय सैनिकों का खून खौल उठा। उन्होंने राइफलें सँभाल लीं। दोनों ओर से आमने-सामने गोलियों चलने लगीं। अनेक भारतीय जवान वहीं समाप्त हो गए, परन्तु कुछ उस व्यूह

को तोड़कर बच निकले।

चीनी चालबाजियों का यहीं अन्त नहीं हुआ। उन्होंने ८ दिसम्बर को रेडियो से घोषणा की कि, "ब्रिगेडियर होशियार सिंह का शव चीनी सीमा- रक्षकों को एक खेत में पड़ा मिला और उन्हें वहीं दफना दिया गया।"

तब उन जंगलों से ब्रिगेडियर होशियार सिंह का शव निकाला गया और ६ जनवरी को तेजपुर से ७० मील दूर फुताँग में पूरे सैनिक-सम्मान के साथ उनकी अंत्येष्टि की गई।

सिपाही केवल सिंह

"सत् श्री अकाल”

"चाचा, देख लेना। यदि मुझे कभी मौका मिला तो आपका नाम रौशन करूंगा", नवयुवक केवल सिंह ने गर्व से सिर ऊँचा करके अपने चाचा श्री मोहन सिंह से कहा।

चाचा अपने १८ वर्षीय भतीजे के मुँह से इन ओजपूर्ण शब्दों को सुनकर गद्गद हो उठे। वे स्वयं भी एक वीर योद्धा थे और पिछले विश्व- युद्ध में काफी नाम कमा चुके थे। आज वे अपने भतीजे के साथ मेले में आए हुए थे। इसी मेले में फौज की भरती भी हो रही थी। यहीं नवयुवक केवल सिंह अपने चाचा को जबरदस्ती लाया और भरती के दफ्तर में अपना नाम लिखा गया।

जलंधर जिले के कोटली-थानपुर में पैदा होने वाला युवक केवल सिंह पंजाब की उस मिट्टी का बना था जो पाँच पवित्र नदियों के पानी से "सिची हुई है, जिसके कण-कण में महाराज रणजीतसिंह, हरिसिंह नलुआ, गुरु गोबिंद सिंह और बन्दा वैरागी जैसे वीर-शिरोमणियों का खौलता खून भी हैं।

युवक केवल सिंह जब भरती होने गया, तब उसकी धमनियों में पंजाब का वहो वीर-रस प्रभावित हो रहा था और उसके मन में केवल एक ही बात समाई हुई थी कि "काश ! मुझे मौका मिलता तो मैं अपना, अपने चाचा, अपने खानदान और अपने देश का नाम रौशन कर देता।"

और ठीक एक साल बाद उसे यह मौका मिल गया। उसे चालोंग की एक अग्रिम चौकी की रक्षा करने के लिए तैनात कर दिया गया। २७ अक्तूबर १६६२ का वह भयावह दिन। १३ हजार फुट ऊँचाई

पर अग्रिम चौकी की रक्षा के लिए तैनात सिख रेजिमेंट की एक टुकडी

और सामने ऊबड-खाबड घाटी में बहती हुई लोहित नदी। एक ओर माओ के विस्तारवादी इरादों को पूरा करने के लिए टिड्डी-

दल के समान विशाल संख्या में आने वाले चीनी सैनिक और दूसरी ओर अपनी मातृभूमि के धवल-किरीट परम-पुनीत हिमालय की रक्षा करने वाले मुट्ठीभर वीर भारतीय सैनिक।

चीनी सैनिक इस अग्रिम चौकी से आगे वालोंग तक बढ़ना चाहते हैं और फिर वहाँ से और आगे बढ़कर आसाम के तेल-क्षेत्र पर कब्ज़ा जमाना चाहते हैं। सिपाही केवल सिंह और उसके साथी चीनियों के इस इरादे को मटियामेट करने के लिए कटिबद्ध होकर खाइयों में मोर्चा बाँधे हुए हैं। चारों ओर खामोशी छाई हुई है, केवल लोहित नदी की तीव्रगामी लहरों की आवाज सुनाई दे रही है। शरीर को वेध डालने वाली सर्द हवा चल रही है। प्रत्येक सैनिक राइफल साधे सतर्क है। दुश्मन कभी भी हमला कर सकता है।

"सत्यानाश हो इन चीनियों का, जिन्होंने बेवजह हमारे देश पर हमला किया है," एक सैनिक ने दाँत पीसते हुए कहा।

पास ही लेटे दूसरे सैनिक ने उत्तर दिया, "हाँ, हमारे प्रधान मंत्री नेहरू जी ने तो इनकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया और ये इतने दगाबाज हैं कि एक ओर 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' कहते रहे और दूसरी ओर भारत को हड़पने की तैयारी करते रहे।"

"अरे करलें वे तैयारी, जितनी चाहें कर लें," केवल सिंह ने उपेक्षा का भाव दिखाते हुए कहा, "ये चार फुटे बौने क्या खाकर लड़ेंगे ! आने तो दो, एक-एक को भूनकर रख देंगे।"

पहले सैनिक ने फौरन कहा, "मैंने तो कसम खाली है कि या तो दुश्मन को चुन-चुन कर मारूँगा, नहीं तो यहीं अपनी जान दे दूंगा।"

"मैंने भी गुरु ग्रन्थ साहब के सामने मत्था टेककर वचन दिया है कि अपने जीते जी दुश्मन को आगे नहीं बढ़ने दूंगा," केवल सिंह ने कहा।

"चुप हो जाओ," एक सैनिक ने उन्हें टोककर जल्दी से कहा, "शोर सुनाई दे रहा है। शायद दुश्मन आ गया।"

ली हैं। सभी सतर्क हो गए हैं। सबने अपने मजबूत हाथों में राइफलें थाम

शोर अब साफ सुनाई देने लगा है। चीनियों को उम्मीद है कि भारतीय सैनिक उनके शोर को ही सुनकर डर के मारे भाग जाएँगे। परंतु

वे भूल कर रहे हैं। उन्हें शायद यह मालूम ही नहीं कि अकेला भारतीय जवान सौ शत्रुओं को देखकर भी मैदान से नहीं भागता। युद्ध के मैदान से भागने का गुण तो चीनी सैनिकों में ही है।

चीनी बहुत आगे बढ़ आए हैं। संख्या में हजार से अधिक हैं। शो मचाते हुए आगे बढ़ते ही जा रहे हैं।

भारतीय सैनिक खाइयों में मोर्चा बाँधे हुए हैं। राइफल का बट उनके सीने से सटा हुआ है, बायाँ हाथ बैरल को मजबूती से जकडे हुए है और दाहिने हाथ का पहली उंगली ट्रिगर पर है।

चीनी अब काफी निकट आ गए है। उन्होंने अपनी आटोमैटिक राइफलों से गोलियाँ छोडनी शुरू कर दी हैं। अपने रेंज के अन्दर आते ही भारतीय सैनिकों ने भी जवाब देना शुरू कर दिया है। अगली पंक्ति के चीनी सैनिक धडाधड मरने लगे हैं। पीछे के सैनिक सहमकर रुक गए है। अब उनकी आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हो रही है। वे इधर-उधर छिपते लगे है। शोर मचाना बन्द हो गया है, मानो उनके मुँह पर ताले पड गए हों। अब गोलियाँ भी नहीं बरसा पा रहे हैं, मानो उनके हाथों को लकवा मार गया हो।

"वाह रे मेरे काग़ज़ के शेरो," सिपाही केवल सिह ठहाका मारकर हँस पडा है, "पहले ही राउण्ड में घिग्गी बंध गई ?"

"अरे ये तो चीनी खिलीन है," दूसरा सिपाही बोल उठा है, "हमारी राइफलों की गर्मी से पिघलकर पानी हो गए हैं।"

तभी लगभग सी चीनी सैनिक आड स फुदक-फुदक कर सामने आ

गए हैं। वे अब भारतीय मोचे की ओर गोलियाँ छोडते हुए आ रहे हैं। "सँभलो," केवल सिह गरज उठा है। उसकी राइफल आग बरसाने लगी है। चीनी सैनिक फिर धडाधड गिरने लगे हैं।

उन सौ सैनिकों के समाप्त होते ही अब सौ सैनिकों का दूसरा दल मृत सैनिकों को रौंदता हुआ आगे बढ़ने लगा है। दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी है। भारतीय सैनिकों के अचूक निशाने के सामने वे एक भी कदम आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। और लोयह दूसरा दस्ता भी खत्म हो गया है। लोहित नदी की वह घाटी चीनी लाशों से पटने लगी है।

लेकिन फिर तीसरा दस्ता आ गया है। अब के ढाई-तीन सौ से कम

नहीं हैं। भारतीय सैनिकों की गोलियों की बौछार के आगे वे सहम-सहम कर अपने साथियों की लाशों को रौंदते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

सिपाही केवल सिंह और उसके साथियों के हाथ मानो मशीन के बन गए हों। उनकी राइफलों की गोलियों का एक राउण्ड खत्म होता है, तो वे फौरन दूसरा राउण्ड भर देते हैं। एक भी सेकण्ड बरबाद नहीं करते, एक भी गोली बेकार नहीं जाने देते, एक भी कदम दुश्मन को आगे नहीं बढ़ने देते ।

और लो, अब के तीन-चार सौ चीनी एक साथ शोर मचाते हुए, आटोमैटिक राइफलों से गोलियों की बौछार करते हुए भारतीय सैनिकों की ओर भागते चले आ रहे हैं।

भारतीय सैनिकों ने भी उन्हें आगे न बढ़ने देने की कसम खा रखी है। उनके चेहरे तमतमा उठे हैं, उनकी राइफलें आग बरसा रही हैं। चीनी सैनिक घबरा उठे हैं, लाशों के अम्बार लग गए हैं; खून की अनगिनत धाराएँ नदी के रूप में बहने लगी हैं। चीनी सैनिकों के हाथ-पाँव फूलने लगे हैं। और और उस ओर देखो - चीनी सैनिक मैदान छोडकर भाग खडे हुए हैं। कायर कहीं के ! वे सैकडों की संख्या में हैं, उनके पास आटोमैटिक हथियार हैं, ऊँचाई पर हैं, परन्तु मुट्ठीभर भारतीय जवानों के सामने दुम दबाकर भाग गए हैं।

सिपाही केवल सिंह एक बार फिर ठहाका मारकर हँस पडा है। १३,००० फुट की ऊँचाई पर उस अग्रिम चौकी में मोर्चा बाँधे वे भारतीय जवान उस भयंकर ठण्ड में पसीने से लथपथ हो गए हैं। खाइयों में जिन्दगी और मौत के बीच लेटे-लेटे तथा दुश्मनों को मौत के घाट उतारते-उतारते वे थककर चूर हो गए हैं। फिर भी चीनियों के भागने के ढंग को देखकर उन्हें बरबस हँसी आ गई है। वे ठहाका मारकर हँसने लगे हैं। उन्हें लग रहा है मानो किसी व्यक्ति को अकेला देखकर उसके हाथ से चवेना झपटने के लिए बन्दरों की कोई टोली आई हो और अब उस व्यक्ति के ढेला उठाते ही वे बन्दर ताबडतोड भागते चले जा रहे हों।

"ये हैं चीनी सैनिक," हवलदार कह रहा है, "इन्हीं के बल पर चीन के हुक्मरान भारत को फतह करना चाहते हैं। बेवकुफ कहीं के !"

"क्या कहूँ," केवल सिंह दाँत पीसते हए कहता है, "डरपोक भाग खडे हुए। वरना एक को भी जिन्दा न छोडता।"

तभी दूर से गोलियाँ चलने की आवाज आती है। सब एक-दूसरे को देखते हैं।

"मालूम होता है," हवलदार कहता है, "चीनी अफसर उन भगोडों को मौत के घाट उतार रहे हैं।"

"हाँ, लगता तो ऐसा ही है, केवल सिंह उस आवाज की ओर कान लगाकर सुनता हुआ हवलदार के कथन से सहमत होकर कहता है, "चलो जो काम हमने करना था, वह उन्हीं के अफसरों ने कर दिया है।"

"लेकिन अब हमें और सतर्क हो जाना चाहिए," हवलदार उन्हें चेतावनी देता है, "वे भगोडे अब डर के मारे इधर ही भागकर आएँगे।"

"बात तो जंचती है, "केवल सिह गम्भीर होकर कहता है, "चलो, फिर एक बार और सही। एक बार फिर जिस्म में गरमी आ जाएगी। यहाँ की बर्फानी हवा है या कुरियाँ, जिस्म को छेदे डाल रही है।"

ओर अभी वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया कि घाटी से फिर शोर सुनाई देता है। तब सतर्क हो गए हैं; अपने-अपने मोर्चे पर जम गए है। राइफलों का बट। फर सीने से जुड गया है, वाएं हाथों ने बैरल को जकड लिया है, दाहिने हाथ की उंगलियां ट्रिगर पर जम गई हैं।

शोर काफा निकट पहुँच गया है। अनगिनत नरमुण्ड दिखाई देने लगे है। आटोमेटिक राइफलों की बौछार आने लगी है।

अबक भीषण हमला हो गया है। दुश्मन एक हजार से कम नहीं है। भारतीय जवानों ने पूर वेग स गोलियां चलानी शुरू कर दी हैं, परन्तु वे रुक नहा रह है। आग क सानक धडाधड मरते जा रहे हैं और पीछे से और अधिक सीनक उनका लाशों पर चढ़कर आगे बढ़ते जा रहे हैं।

"इस बार कडा मुकाबला है। दुश्मन जान देने पर उतारू है." हवलदार अपनी गरजदार आवाज में चेतावनी देता है, "जीते जी दुश्मन को आगे नहीं बढ़न देना है।"

कवल सिह के दांत भिच गए है, चेहरा तमतमा गया है। उसने राइफल से आग बरसानी शुरू कर दी है।

चीनी सैनिक एक बार फिर सहम गए हैं। अगली पंक्ति के सैनिक डर के मारे इधर-उधर भाग खडे हुए हैं। परन्तु तभी पीछे से उन्हीं के अफसरों ने उन्हें गोलियों से उडा दिया है।

अब कोई भी सैनिक भागने की हिम्मत नहीं कर रहा है। उनके

सामने केवल एक ही रास्ता रह गया है-वे आगे बढ़ें और आगे बढ़ें और अपनी जान दे दें। इसके अलावा और कोई चारा नहीं है। वे काँपते हाथों से गोलियाँ चलाते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं. मर रहे हैं... और फिर पीछे के सैनिक उनका स्थान लेते जा रहे हैं। कभी न टूटने वाला यह क्रम चलता जा रहा है। सैकडों चीनी मर चुके हैं, फिर भी सैकडों पीछे खडे हैं। यह कोई सेना है या समुद्र ? समझ में नहीं आता। वे अब केवल २० गज की दूरी पर रह गए हैं।

भारतीय सैनिक पूरी शक्ति से उनका मुकाबला कर रहे हैं। सिपाही केवल सिंह पर मानो रणचण्डी सवार हो गई है।

"कसम वाहे गुरु की, या तो ये चीनी या मैं," सिपाही केवल सिह बडबडा रहा है और मशीन की तरह राइफल से गोलियाँ छोडता जा रहा है।

लेकिन चीनियों का समुद्र-का-समुद्र उमडता चला आ रहा है। अब वे सिर्फ दस गज दूर रह गए हैं। अनेक भारतीय सैनिक अपनी जान गँवा बैठे हैं। केवल ७-८ रह गए हैं।

"साले दगाबाज कहीं के," केवल सिंह जोर से चीख उठा है, "हमारी धरती पर हमसे ही मुकाबला ! तुम्हारी यह हिम्मत !"

निकट लेटे हवलदार और अन्य सैनिकों की निगाहें कभी-कभी केवल सिंह की हरकतों पर पड जाती हैं, परन्तु वे उस समुद्र को रोकने में तल्लीन हैं ! कुछ बोल नहीं पा रहे हैं !

चीनी अब काफी निकट आ गए हैं और भारतीय सैनिकों को तीन ओर से घेरने में लगे हैं। उन्हें रोकना असम्भव हो गया है। वे इतने निकट आ गए हैं कि अब साधारण राइफलों से उनका मुकाबला नहीं किया जा सकता ।

सिपाही केवल सिंह बेचैन हो उठा है। उसके अंग-अंग से खून निकल रहा है, फिर भी वह उसकी परवाह न कर तडातड गोलियाँ चलाता जा रहा है।

लेकिन अब खाई में छिपकर मुकाबला नहीं किया जा सकता । दुश्मन बिल्कुल सिर पर आ गया है। अब कोई भी भारतीय सैनिक बच नहीं सकता ।

केवल सिंह का चेहरा तमतमा उठा है, दाँत भिच गए हैं, मन किसी

संकल्प से दृढ़ हो गया है।

"सत् श्री अकाल," वह पूरे जोर से गरज उठा है और लो... वह पूरे वेग से शत्रुओं पर झपट पङा है। उसकी राइफल की गोलियाँ उसके लिए शत्रुओं के बीच रास्ता बनाती जा रही हैं।

चीनी सैनिक एकबारगी हकबका कर खङे रह गए हैं। परन्तु अफ- सोस ! उसकी गोलियाँ समाप्त हो गई हैं। अब वह क्या करे !

परन्तु नहीं, वह हताश नहीं हुआ है। चीनियों ने उसे चारों ओर -से घेर लिया है उसके शरीर पर अनगिनत गोलियाँ लग चुकी हैं। और वो देखो, उसने राइफल को उल्टा पकङ लिया है और चीनियों पर डण्डे की तरह ताबङतोङ बरसाता जा रहा है। चीनी सैनिक हतप्रभ हो उठे हैं।

और वो देखो देखो केवल सिंह का शरीर गोलियों से छलनी हो गया है। वह लङखङा रहा है, लेकिन लाठी की तरह राइफल अभी भी उसके हाथ में है।

और देखो वह गिर पङा है, उसके मुँह से झाग निकल रही है और वह फुसफुसा रहा है. 'सत् श्री अकाल..।"

बर्फ की समाधि

जोधपुर से १११ मील दूर एक छोटा-सा गाँव-बानासर। लद्दाख में बीरगति पाने वाले अमर सेनानी मेजर शैतान सिंह के घर के सामने हजारों की भीङ जमा हो रही है। राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहन लाल सुखा- डिया आने वाले हैं। मेजर शैतान सिंह की माता, पत्नी, छोटा पुत्र नरपत सिंह, भाई सूरजभान सिंह तथा अन्य सगे-सम्बन्धी उनके स्वागत के लिए खङे हैं।

मुख्य मंत्री की कार पहुँची। वे दरवाजा खोलकर बाहर निकले । उनके साथ राजस्थान के कुछ मंत्रीगण तथा अन्य अधिकारी भी बाहर आए। मुख्य मंत्री मेजर शैतान सिह के परिवार वालों से मिले। उस वीरात्मा की याद से सबकी आँखें नम हो गई, गला भर आया ।

मुख्य मंत्री ने उपस्थित जनता को सम्बोधित करते हुए कहा, "राज- स्थान के वीर सेनानी मेजर शैतान सिंह को भारत सरकार ने परमवीर चक्र से विभूषित किया है। उन्होंने यह सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त कर राजस्थान का गौरव बढ़ाया है। हमारे राजस्थान का इतिहास शौर्य और बलिदान की गाथाओं से भरा पङा है। राष्ट्र द्वारा मेजर शैतान सिंह के इस सम्मान पर राजस्थान के प्रत्येक नागरिक को अभिमान है। देश की रक्षा करने में राजस्थान सदैव अग्रणी रहा है। उसके रणवाँकुरों के कारनामे इतिहास में सदैव अमर रहेंगे। मेजर शैतान सिंह के बलिदान की अमर गाथा हमें युग-युगों तक अनुप्राणित करती रहेगी और आक्रान्ताओं को अपनी सीमा से परे खदेङने के हमारे संकल्प को बल प्रदान करती रहेगी।

श्रोताओं के सीने गर्व से फूल उठे; नौजवानों की भुजाएँ फङक उठीं । सबकी आँखों के सामने मेजर शैतान सिंह का वह देदीप्यमान चेहरा घूम गया ।

गृह मंत्री श्री मथुरा दास ने मुट्ठी भींचकर हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, "मेजर शैतान सिंह राजस्थान के वीर सपूत हैं, जिन्होंने राजस्थान का

मुख उज्ज्वल किया है। परमवीर चक्र का पुरस्कार केवल उस वीर सेनानी के लिए ही नहीं बल्कि पूरे राजस्थान के प्रत्येक नागरिक के लिए सम्मान की बात है।"

श्रोताओं में फिर एक बार जोश की लहर उमङ पडी। मेजर शैतान सिंह की जय के नारों से आकाश गूंज उठा।

तभी मेजर के छोटे भाई सूरजभान सिंह ने अपने सीने को ठोंकते हुए अपनी बुलन्द आवाज में कहा, "हमारा परिवार अपने देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने के लिए तैयार है। यदि हमारे शीश कटाने से देश का मस्तक ऊँचा होता है, तो हम उसके लिए भी तैयार हैं।"

चारों ओर से, 'धन्य हो, धन्य हो,' की आवाजें आने लगीं। भारत माता के इस वीर सपूत की गर्जना से मुख्य मंत्री का दिल भर आया। उन्होंने राजस्थान सरकार की ओर से दस हजार रुपया नकद और भाखङा क्षेत्र की पचास बीघा जमीन का पट्टा मेजर शैतानसिंह के परिवार वालों को सौंप दिया।

अब सुनिए मेजर शैतान सिंह की अदम्य वीरता की कहानी - लद्दाख में चुगूल के निकट का बर्फीला इलाका। चीनी सैनिक चारों ओर भारी तोपें, मोर्टार और आटोमैटिक राइफलें लिए भरे पडे थे। उनका

ध्येय था- चुगूल हवाई अड्डे को जाने वाली सङक पर कब्जा करना। इस सङक की रक्षा का भार कुमायूँ रेजिमेंट के मेजर शैतान सिंह को सौंपा गया था। उन्होंने अपनी कम्पनी की प्लाटूनों को विभिन्न स्थानों पर मोर्चा जमाने के लिए तैनात कर दिया और अपना सदर मुकाम ऐसी जगह बनाया जहाँ से वे उन प्लाटूनों का संचालन कर सकें।

१८ नवम्बर १६६२ को अभी सूर्य की पहली किरण भी नहीं फूटी थी कि चीनी हमलावरों ने भारी संख्या में आकर दो दिशाओं से एकदम हमला बोल दिया।

भारतीय जवान पहले से ही तैयार थे। उन्होंने अपनी मोर्टारों और लाइट मशीनगनों से हमलावरों को भूनता शुरू कर दिया। हमलावर एक कदम भी आगे न बढ़ सके। एक-एक भारतीय जवान ने तीस-तीस चालीस-चालीस चीनी सैनिक मौत के घाट उतार दिए जो भी उनकी रायफल की रेंज में आ जाता ढेर हो जाता। यहाँ तक कि अनगिनत

आक्रमणकारी चीनी सैनिकों में से एक भी सैनिक जीवित वापस न लौट सका। और इस प्रकार चीनी सैनिकों का पहला आक्रमण असफल कर दिया गया।

चीनी अधिकारी अपना-सा मुँह लेकर रह गए। परन्तु उन्हें आदेश था कि किसी भी प्रकार से इस सङक पर कब्जा करना है, चाहे कितने ही सनिक क्यों न मारे जाएँ। चीनी अधिकारी जानते थे कि यदि उन्होंने इस आदेश का पालन न किया तो उनके ऊपर के अधिकारी उन्हें गोली से उडा देंगे। यह चीन में बहुत मामूली-सी बात है। वहाँ मनुष्य के प्राणों का कोई मूल्य नहीं है। एक चीनी सैनिक का मरना और एक चींटी का मरना वे बराबर समझते हैं।

अतः चीनी सैतिक अधिकारियों ने एक हजार से भी अधिक सैनिक दूसरे आक्रमण में झोंक दिए।

दुबारा घमासान युद्ध छिङ गया।

सैकङों चीनी सैनिक बाएँ किनारे की प्लाटून पर चढ़ आए। वहाँ जमादार सुरजा मोर्चा सँभाले हुए थे। अपने ऊपर सैकङों चीनियों को टूटते देख उनकी भुजाएँ फङक उठीं और वे अपनी लाइट मशीनगन से ही दुश्मन को भूनने लगे।

परन्तु अचानक ४० चीनी सैनिक शोर मचाते हुए जमादार सुरजा पर टूट पङे। जमादार ने अकेले ही उनका सामना किया और दर्जनों चीनियों को अपनी मशीनगन से भून डाला। लेकिन उतने अधिक शत्रुओं के सामने उनकी अधिक देर तक न चल सकी और वे वहीं पर लङते-लङते वीरगति को प्राप्त हो गए।

दाएँ किनारे की प्लाटून पर भी सैकङों चीनियों ने एक साथ धावा बोल दिया। वहाँ भी घमासान युद्ध चलता रहा और चीनी सैनिक भारतीय जवानों की गोलियों के शिकार होते रहे।

परन्तु तभी अचानक लगभग ४०० चीनी सदर मुकाम के पीछे पहुँच गए और वहाँ से मोर्टार तोपों से गोले बरसाने लगे और इस प्रकार भारतीय सैनिक आगे और पीछे दोनों ओर से घिर गए।

मेजर शैतान सिंह ने तब भी हिम्मत न हारी। उन्होंने तत्काल पीछे से आने वाली गोलाबारी का जवाब गोलाबारी से देना शुरू कर दिया। उन्हें अनेक चोटे लग गई थीं, फिर भी वे लङते रहे और अपने जवानों को

मोर्चा सँभालने का आदेश देते रहे।

इस बीच उन्हें घातक गोली लग गई। दो जवानों ने उन पर गोली लगते और उन्हें बेहोश-सा होते देख लिया। उन्होंने तत्काल मेजर शैतान सिंह को उठाया और उन्हें सुरक्षित नाले की ओर ले चले, ताकि वे दुश्मनों की गोलियों की बौछार से बच सकें।

परन्तु मेजर शैतान सिंह भी उन लोगों में से नहीं थे, जो लड़ाई के मैदान से मुँह छुपाते हैं।

उन्होंने तुरन्त गरजकर जवानों से कहा, "तुम मेरी परवाह मत करो। मेरी जान इतनी कीमती नहीं है। मोर्चा बचाना अधिक कीमती है। जाओ, मोर्चे पर पहुँचो। मुझे यहीं छोड़ दो।"

दोनों जवान मेजर को वहीं छोड़कर तुरन्त मोर्चे पर चले गए।... और शैतान सिंह ने वहीं १८,००० फुट ऊँचाई की बर्फीली चोटी पर चुणूल को जाने वाली सड़क की रक्षा करते-करते अनन्त समाधि ले ली।

हाँ, एक महान् कार्य वे कर गए, जो उनके साथ के सैनिकों को सदैव याद रहेगा। चीनी सैनिकों ने बड़े जोर-शोर से ऐलान किया था कि वे अगली सुबह की चाय चुगूल में पिएँगे। परन्तु भारत-माँ के लाल वीर शिरोमणि शैतान सिंह ने अपने शौर्य और पराक्रम से चीनियों का यह स्वप्न पूरा नहीं होने दिया और वे खून का घूंट पीकर रह गए।

और अंत में-

मेजर शैतान सिंह ने जिस सड़क की रक्षा में प्राणों की आहुति दी थी, उसी सड़क के किनारे सैनिक अधिकारियों ने काफी खोज करके १६ फरवरी को बर्फ के नीचे से खोदकर उनका शव निकाला।

वह शव सीधे कश्मीर भेजा गया और १८ फरवरी को भारतीय वायु-सेना के एक विशेष विमान द्वारा उसे जोधपुर पहुंचाया गया।

जोधपुर के हवाई अड्डे पर हजारों नागरिकों ने शव के अंतिम दर्शन किए और फूल-मालाएँ चढ़ाई। मेजर के पुत्र नरपत सिंह, राजस्थान के मुख्यमंत्री, अन्य मंत्रीगण तथा उपमंत्री, सैनिक अधिकारी, न्यायाधीश आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

१७५ सैनिकों ने अपनी राइफलें नीची करके स्वर्गीय मेजर को

अंतिम सलामी दी । सैनिक बैण्ड के साथ नगर के प्रमुख बाजारों से शव- यात्रा निकाली गई । स्वर्गीय मेजर के पुत्र ने अन्तिम संस्कार किए। फार्यारंग पार्टी ने तीन धमाके किए और अंत में तुरहीनाद करके भारत माता के उस वीर लाङले पुत्र को अन्तिम विदाई दे दी गई।

मेजर शैतान सिंह आज हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए उन्होंने जिस शौर्य और अदम्य वीरता से दुश्मन का सामना किया, उससे हमें हमेशा-हमेशा प्रेरणा मिलती रहेगी।

राइफलमैन बच्ची सिह

यमदूतों के शिकंजे से

रात के बारह बज चुके थे। राइफलमैन बच्ची सिह निश्चिन्त होकर अपनी चौकी पर लेट रहा था। उसे खुशी थी कि वह अँधेरी रात में भी दूसरी चौकी पर जरूरी संदेश पहुँचाने के बाद अब रास्ता टटोलता हुआ अपनी चौकी के निकट पहुंच गया था। वह सोच रहा था कि बसं अब में प्लाटून कमाण्डर को रिपोर्ट देकर आराम से सो जाऊँगा। रास्ते की थकान मिट जाएगी।

नेफा की इन ऊँची-ऊंची पहाडियों पर इतने कष्ट तो सहने ही पडेंगे। यही तो हमारा कर्त्तव्य है। हम अपने देश के इस इलाके में इन्हीं कामों के लिए तो तैनात हैं। अब कमाण्डर साहब मुझे एकाएक इस समय यहाँ देखेंगे तो उन्हें कितना आश्चर्य होगा। वे तो समझते थे कि में दूसरी चौकी पर संदेश पहुंचाने के बाद सुबह तक ही लौट पाऊँगा, परन्तु में १२ बजे ही वापस आ गया हूँ। वे अवश्य हो आश्चर्य करेंगे कि मैं इतनी जल्दी कैसे आ गया और वे मेरी प्रशंसा भी करेंगे। सोचते-सोचते बच्ची सिंह मुस्कराने लगा। घनघोर अँधेरा छाया हुआ था। बच्ची सिह रास्ता टटोलता हुआ तेजी से चलने लगा।

चौकी के काफो निकट पहुँचने पर उसे एक चट्टान की आङ में कुछ छायाएँ हिलती दिखाई दीं। अच्छा, तो कमाण्डर साहब ने इस ओर भी पहरेदार लगा दिए हैं। बच्ची सिह सोचने लगा। अच्छा ही किया उन्होंने। सतर्क रहना हमारा प्रमुख कत्रतव्य है। चलें, दो-एक मिनट इनसे भी बात कर लूँ; फिर कमाण्डर साहब से मिल लूंगा।

यह सोचकर बच्ची सिह उन सैनिकों की ओर बढ़ा। वे सैनिक चुपचाप थे। न उन्होंने 'हाल्ट' कहा और न सामने ही आए। शायद अभी उन्होंने मुझे नहीं देखा। बच्ची सिह ने सोचा। अब में ही उन्हें आवाज दू ताकि उन्हें पता चल सके कि वे कितने लापरवाह हैं, कि बाहर से उनके इतने निकट पहुंचने पर भी वे न जान पाए।

और यह सोचकर बच्ची सिंह कुछ कहने ही वाला था कि वे सैनिक

जोर से "हिन्दी-चीनी भाई-भाई" चिल्लाकर उस पर टूट पडे ।

बच्ची सिंह क्षणभर के लिए हक्का-बक्का रह गया। जब तीनों ने उसे अच्छी तरह जकड लिया तब बच्ची सिंह ने गौर से उनका चेहरा देखा। तीनों ही चीनी सैनिक थे। ओह, कितना बडा घोखा हुआ ! बच्ची सिह ने पूरा जोर लगाकर अपने को छुडाने का प्रयत्न किया, पर बेकार।

दो चीनी सैनिकों ने बच्ची सिंह को दोनों ओर से जकड लिया और सोसरे ने पीछे से अपनी आटोमैटिक की नोक उसकी पीठ से सटा दी। "चलो," पीछे वाले चीनी ने राइफल की नोक से बच्ची सिंह को कोंचते हुए कहा ।

बच्ची सिंह चुपचाप बन्दी होकर शत्रु की चौकी की ओर बढ़ने जगा । उसे अत्यन्त आश्चर्य हो रहा था कि यह सब एकाएक कैसे हो गया। हमारे सैनिक कहाँ गए ? अभी दस घण्टे पहले चौकी में रौनक थी, सब यहीं थे; दुश्मन के आने की कोई आशंका नहीं थी। फिर यह सब कैसे हो गया ? ये चीनी यहाँ कैसे पहुँच गए ? क्या हमारे सभी सैनिक मारे गए ? या मेरी तरह बन्दी बना लिए गए ? लेकिन सब सैनिक बन्दी नहीं बनाए जा सकते । हमारे सैनिकों ने मरते दम तक अपने को बन्दी नहीं बनने दिया होगा। वे अन्तिम साँस तक अवश्य ही लडे होंगे। यदि मुझे क्षणभर पहले आभास हो गया होता तो मैं भी जान दे देता पर इस तरह अपने को इन दगाबाजों के हवाले न करता। पर अब क्या किया जाए ? बच्ची सिंह यह सोचता हुआ उस अँधेरी रात में चीनियों का बन्दी बनकर चला जा रहा था।

बात यह हुई कि शाम को प्लाटून कमाण्डर ने बच्ची सिंह को एक बहुत आवश्यक सन्देश देकर दूसरी चौकी पर भेज दिया था और जल्दी-से- जल्दी उत्तर लेकर वापस आने को कहा था।

इसी बीच लगभग ११ बजे रात चीनी सैनिकों ने इस चौकी पर अचानक हमला कर दिया। चौकी पर मुश्किल से २८-३० सैनिक थे और हमलावरों की संख्या १००० से कम न थी।

प्लाटून कमाण्डर ने फौरन परिस्थिति भाँप कर अपनी प्लाटून को सदर चौकी लौटने का हुक्म दे दिया, ताकि वहाँ पहुँचकर और सैनिकों की

मदद मिल जाए और तब दुश्मन से और अच्छी तरह से मुकाबला किया जा सके।

फलतः भारतीय सैनिक दुश्मन का मुकाबला करते हुए धीरे-धीरे खिसककर सदर चौकी पहुँच गए। चीनी सैनिकों ने चौकी पर कब्जा जमा दिया और वे भी वहाँ तीन पहरेदार छोड़कर अपनी चौकी पर वापस लौट गए, ताकि प्रातः रोशनी होते ही वे फिर इस चौकी पर अड्डा जमा कर आगे बढ़ें।

यह सब काम घण्टे भर में हो गया। बच्ची सिह अभी दूसरी चौकी से नहीं लौटा था। इसलिए उसे इसकी जरा भी खबर नहीं थी। वह निश्चिन्त होकर अपनी चौकी पर वापस लौट रहा था।

चौकी के बिल्कुल निकट पहुँचने पर जब चीनी सैनिकों ने उस पर टूटकर उसे बंदी बना लिया, तब कहीं उसे अनुमान हुआ कि मामला क्या है।

अब राइफलमैन बच्ची सिंह तीन दुश्मनों के बीच घिरा हुआ यही सोच रहा था कि वह किस तरह इन यमदूतों के चंगुल से बचे और अपने साथियों का पता लगाए।

उस सुनसान अँधेरी रात में भी चीनी सैनिकों की बातों और हल- चल से उसने अन्दाजा लगा लिया कि चीनी चौकी निकट ही है। अब क्या किया जाए ? क्या इसी तरह निहत्था बेबस होकर अपनी जान गँवा दूँ ? क्या इन धोखेबाज़ चीनियों की कैद में रहूँ ? नहीं, भारतीय जवान कभी भी दुश्मन के आगे घुटने नहीं टेकता। मरते दम तक वह दुश्मन से लोहा लेता है। बच्ची सिह तेजी से सोचता जा रहा था। तो क्या आखिरी प्रयत्न करूँ ? क्या होगा, जान ही तो जाएगी, दुश्मन का बंदी तो नहीं बना रहूँगा।

और बच्ची सिह ने एकाएक दोनों हाथों को जोर से झटका दिया और तेजी से पीछे भागा। दोनों चीनी चारों खाने चित्त हो गए। तभी पीछे वाले चीनी ने गोली दाग दी। वह बच्ची सिंह की बाँह में लगी और खून का फव्वारा छूट पड़ा। परन्तु इससे पहले कि चीनी दूसरी गोली दागे, बच्ची सिंह कूदकर आड़ में हो गया।

चीनी सैनिक उसे ढूंढने के लिए राइफल ताने आगे बढ़ा। बच्ची सिह उछलकर दूसरी चट्टान के पीछे हो गया। चीनी और आगे बढ़ा। एक निहत्था और दूसरा राइफल ताने। दोनों में बचने और मारने की होङ लग गई। चीनी सैनिक जरा-सी आहट पाकर धाँय-से गोली दाग देता। बच्ची सिंह बिना कोई शब्द किए खिसकने का प्रयत्न करता परन्तु उस अँधेरे में थोङी-बहुत आवाज हो ही जाती, और तभी एक गोली सन्न से उसके निकट से गुजर जाती। उसके सामने जिदगी और मौत दोनों आँखमिचौली खेल रही थीं। बच्ची सिह सोचता, काश ! मेरे पास भी राइफल होती तो यह चोनी जीवित न बचता।

बच्ची सिह जिन दो चीनियों को गिराकर आया था, वे भी अब धूल झाङकर तीसरे चीनी के निकट आ गए थे। तीनों बच्ची सिंह को ढूंढने लगे।

बच्ची सिह ने लम्बी छलाँग मारी और एक चट्टान के पीछे हो लिया। चीनी उसी ओर बढ़े।

"खबरदार जो आगे बढ़े," निहत्थे बच्ची सिंह ने कङककर कहा, "पत्थरों से मार-मार कर भुरता बना दूंगा।"

पता नहीं वे चीनी कुछ समझे भी या नहीं, किन्तु बच्ची सिंह की दहाङती आवाज सुनकर ही उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वे वहीं पर ठिठककर खङे रह गए।

बच्ची सिंह को खिसकने का मौका मिल गया। वह तेजी से ऊबङ- खाबङ स्थानों का सहारा लेता हुआ उन चीनियों से दूर पहुँच गया और तब संतोष की साँस लेता हुआ अपने सदर मुकाम की ओर बढ़ गया।

हवलदार स्वरूप सिंह, महावीर चक्र

अन्तिम साँस तक

अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को जब एक अदूरदर्शी विक्षिप्त ने गोली मारी, तब उनके मुँह से अन्तिम शब्द निकले थे- "हे राम" । और भारत माता के बूढ़े प्रहरी हिमालय पर चीनी हमलावरों का मुकाबला करते-करते वीर-शिरोमणि हवलदार स्वरूप सिंह का शरीर जब गोलियों से छलनी हो गया तब मृत्युशैया पर लेटे-लेटे उनके अन्तिम शब्द थे- "मैं अब भी दुश्मन से लडने को तैयार हैं।"

अपनी आँखों के सामने अपने वीर योद्धा हवलदार स्वरूप सिंह के प्राण-पखेरू उडते देख सभी की आँखें नम हो गईं; परन्तु उनकी मुट्ठियाँ भिची हुई थीं और वे मन-ही-मन एक ही संकल्प कर रहे थे- "हम सब दगाबाज हमलावर से हवलदार स्वरूप सिंह और अन्य साथियों के खून का बदला अवश्य लेंगे।"

हवलदार का सारा शरीर मोर्टार बमों और आटोमैटिक राइफलों की गोलियों से छलनी हो चुका था। उनमें उठने तक की शक्ति नहीं रह गई थी। वे बेवस-से कातर निगाहों से इधर-उधर देखते और सोचते- "काश, मुझमें थोडी-सी भी शक्ति होती, तो मैं अभी मोर्चे पर जाकर फिर से दुश्मनों से मोर्चा लेता और उन्हें सीमा पार तक खदेड आता ।"

पर अफसोस ! वे केवल सोचते ही रह गए। मौत उनके अशक्त शरीर पर हावी हो गई और वे जीवन के अन्तिम क्षणों में भी यही कहते रह गए "मैं अब भी दुश्मन से लडने को तैयार हैं।"

यह बहादुर हवलदार लद्दाख की एक चौकी पर उप-कमाण्डर था । उस चौकी से लगभग १००० गज की दूरी पर चीनियों ने चुपके-चुपके खाइयाँ खोद ली थीं और मोर्टार तोपें तथा आटोमैटिक राइफलें लेकर हमला करने के लिए तैयार थे ।

२० अक्तूबर १६६२ को अपने अफसरों का हुक्म पाते ही चीनियों ने भारतीय चौकी पर अचानक हमला कर दिया। भारतीय जवान इस अप्र- त्याशित हमले से चौंके तो जरूर पर घबराए नहीं। उन्होंने तुरन्त मोर्चा

सँभाल लिया।

"सावधान ! दुश्मन चारों ओर फैल गया है," स्वरूप सिंह ने सबको सतर्क करते हुए एक लाँस-नायक को बाईं ओर इशारा करके आदेश दिया, "तुम दो जवानों को लेकर उस चट्टान की आङ ले लो और उधर से दुश्मन को रोको।"

वह लाँस-नायक तुरन्त दो सैनिक लेकर बाईं ओर चला गया। "और तुम," हवलदार ने दूसरे लाँस-नायक से का मोर्चा सँभालो।" कहा, "दाहिनी ओर

वह लाँस-नायक भी दो सैनिक लेकर दाहिनी ओर भागा। "तुम दो मेरे साथ रहो," हवलदार ने दो जवानों से कहा और अन्य को आदेश दिया, "बाकी सब दाएँ-बाएँ फैल जाओ। दुश्मन एक कदम भी आगे न बढ़ने पाए।"

और आधे मिनट के अन्दर ही मोर्चा जम गया। अभी तक केवल दुश्मन की ओर से गोलियाँ चल रही थीं, अब भारतीय सैनिकों की ओर से गोलियों की बौछार शुरू हो गई।

दुश्मन सहमकर रुक गया, परन्तु मोर्टार तोपों से गोले बरसाता रहा।

"दुश्मन के पास लम्बी मार के हथियार हैं," स्वरूप सिंह ने कहा, "अगर हमारी कोई भी साइड कमजोर पङ गई तो नुकसान होगा।"

"हाँ, लगता तो ऐसा ही है कि दुश्मन चौको को घेर रहा है।" निकट के सैनिक ने कहा, "कमाण्डर साहब शायद अब तक सदर मुकाम को खबर कर चुके होंगे। अगर कुमुक आ जाए तो हम दुश्मन का एक भी सैनिक जिन्दा न छोडेंगे।"

गोलाबारी पूरे जोरों पर थी। हवलदार के हाथ मशीन की तरह राइफल चला रहे थे। उन्हें केवल 'कुमुक' और 'कमाण्डर' शब्द सुनाई पङे।

"कुमुक का आना बहुत जरूरी है," उन्होंने कहा, "तब तक दुश्मन को रोकना है....."

वे अपनी बात पूरी भी न कर पाए थे कि एक गोला ठीक उनके पीछे आकर गिरा और उसका एक टुकङा उनकी जाँच में घुस गया। बाई और के सनिक की कनपटी से खून का पाण्यात कपङा पर किसी को भी

यह सब देखने की फुरसत न थी। वे दुश्मन को रोकने में तल्लीन थे । भारतीय सैनिकों के अचूक निशाने के सामने चीनी सैनिक नहीं टिक पा रहे थे, परन्तु उनकी मोर्टार तोपों की लम्बी मार से अनेक भारतीय जवान मौत की नींद सो चुके थे ।

हवलदार स्वरूप सिंह के सामने केवल एक लक्ष्य था-दुश्मन को रोकना । और वे अपने कर्त्तव्य का पूरी तरह पालन कर रहे थे।

तभी किसी ने उनके कंधे पर हाथ रखा और कान में कहा, "सदर मुकाम से हुक्म आया है कि चौकी से लगभग १० मील पीछे मोर्चे के लिए सबसे अच्छी जगह है। हम लोग फौरन रिट्रीट कर वहाँ पहुँच जाएँ। वहाँ कुमुक आ जाएगी ।"

"लेकिन दुश्मन को बिना रोके हमारे जवान कैसे वहाँ तक पहुँच पाएँगे, कमाण्डर साहब ?" स्वरूप सिंह ने पूछा ।

"यहाँ ५ जवानों को छोङे जाते हैं, वे कवर करेंगे। बाकी रिट्रीट करेंगे," कमाण्डर ने उत्तर दिया।

"पाँच की जरूरत नहीं है," स्वरूप सिंह ने कहा, "मैं और मेरे ये दो साथी काफी हैं। हम कवर कर लेंगे, आप बाकी जवानों को लेकर पीछे का मोर्चा सँभाले," स्वरूप सिंह ने कहा ।

"तुम्हारे दो साथी कहाँ रहे ? एक तो मर चुका है।"

"कोई बात नहीं, हम दो कवर कर लेंगे। समय कम है। दुश्मन लम्बी मार कर रहा है। अधिक जवानों को यहाँ छोङना ठीक नहीं।"

कमाण्डर को स्वरूप सिंह की बात जँच गई। उन्होंने बाईं ओर मुङ- कर सैनिकों को रिट्रीट का इशारा किया और फिर दाहिनी ओर मुङकर दाएँ सैनिकों को ।

सब तैयार हो गए। अब केवल दुश्मन की गोलियों से बचने का प्रबन्ध करना था।

स्वरूप सिंह ने दोनों ओर देखा और अपने साथी से कहा, "जवान तैयार हैं। कवर करो।"

और इतना कहते ही उन्होंने राइफल से मशीन की तरह गोलियों की बौछार शुरू कर दी। साथी भी पीछे नहीं रहा। कुछ देर के लिए दुश्मन की धिग्धी बंध गई। वे मुँह छुपाकर दुबक गए ।

बस इतना ही मौका भारतीय जवानों को चाहिए था । वे एक मिनट

में ही दुश्मन की गोली के रेंज से बाहर हो गए।

स्वरूप सिंहे और उनके साथी ने राहत की साँस ली और क्षणभर के लिए राइफले छोङकर उँगलियाँ चटकाने लगे।

भारतीय मोर्चे से गोलियाँ न आते देख चीनियों का फिर हौसला बढ़ा। वे गोलियाँ छोङते हुए आगे बढ़ने लगे। स्वरूप सिंह और उनके साथी ने फिर राइफल सँभाल ली। एक दस्ता आगे बढ़ा। वह दोनों जवानों की गोलियों से वहीं ढेर हो गया। दूसरा दस्ता आगे बढ़ा। वह भी ढेर हो गया।

अब उन्होंने मोर्टार तोपों से भीषण गोलाबारी शुरू कर दी। दोनों

भारतीय जवान पहले ही काफी घायल हो चुके थे। अब तोपों के गोलों के कतरों से उनके शरीर का एक-एक इंच जख्मी हो गया। इसी बीच एक गोला ठीक उनके साथी के निकट गिरा और साथी वहीं ढेर हो गया।

अब स्वरूप सिंह अकेले रह गए। अपनी गोलियाँ खत्म होते ही उन्होंने अपने बगल के मृत सैनिक की पेटी खोल डाली और उससे गोलियाँ निकालकर चलाने लगे।

चीनियों को उम्मीद थी कि वे आधे घण्टे में चौकी ले लेंगे, परन्तु पूरे सात घण्टे बीत गए, वे एक भी कदम आगे न बढ़ सके। उनके लगभग तीन-चौथाई सैनिक मारे गए। उन्हें क्या मालूम कि भारतीय चौकी से अकेला बहादुर हवलदार इतने चीनियों से लोहा ले रहा है। उन्होंने फिल- हाल लौटने और फिर अधिक फ़ौज लाकर हमला करने में ही खैर समझी। परन्तु लौटने से पहले वे एक बार अंधाधुन्ध गोले बरसा गए।

गोलों के अनेक टुकङे स्वरूप सिंह के शरीर में खुभ गए, जिससे उनकी रही-सही शक्ति भी क्षीण हो गई और वे बेहोश हो गए।

"मैं कहाँ हूँ ?" स्वरूप सिंह ने चारों ओर देखकर पूछा। उन्हें एकाएक युद्ध की सभी बातें याद आ गईं। उन्होंने उठने का प्रयत्न किया "पर दो सैनिकों ने तुरन्त रोक दिया।

"मुझे यहाँ कौन लाया ?" स्वरूप सिंह ने कसहकर पूछा। "आप अधिक न बोलें," एक सैनिक ने धीमे से कहा, "आपके काफी

जरूम लगे हैं और कमज़ोर हैं।"

"लेकिन मेरे सवाल का जवाब तो दो," स्वरूप सिंह ने फिर उठने का प्रयत्न करते हुए कहा, "युद्ध का क्या हुआ ? हमारे जवान कहाँ हैं ?"

"युद्ध अभी चल रहा है," सैनिक ने उत्तर दिया, "कल के मोर्चे पर फतह आपकी हुई। चोनी सैनिक भारी संख्या में मारे गए और बाकी भाग खडे हुए। अब वे और अधिक फ़ौज लेकर आ गए हैं। इस समय चौकी से दस मील पीछे हमारे जवान उनसे लोहा ले रहे हैं।"

स्वरूप सिंह ने संतोष के साथ सैनिक की ओर देखा और होंठों पर जीभ फेरते हुए कहा, "पानी।"

सैनिक ने तुरन्त अपना मग भरा और स्वरूप सिंह के मुँह से लगा दिया । पास ही खडा अन्य सैनिक बेचैन होकर स्वरूप सिंह को गिरती हुई हालत देख रहा था ।

"आपने जो कुछ किया, उससे हमारा सिर ऊँचा हुआ है," उस सैनिक ने कहा, "जिस तरह फौलादी दीवाल बनकर आपने अकेले सैकडों चीनियों को रोका उसे हमारे देश का बच्चा-बच्चा हमेशा याद करेगा।"

स्वरूप सिंह ने क्षीण आवाज में पूछा, "मुझे यहाँ कौन लाया ?"

"आपके ही सैनिक लाए," सैनिक ने उत्तर दिया, "बात यह हुई कि जब हम दस मील पीछे हटकर मोर्चा जमाने की तैयारी करने लगे, तब दो जवान कमाण्डर साहव के सामने जाकर बोले, "हुजूर, हमने हवलदार साहब के साथ बहुत ज्यादती की है। उन्हें मौत के मुँह में छोडकर चले आए। हमें वहीं लडकर जान दे देनी थी, पर हवलदार साहब को इस तरह छौडकर नहीं आना चाहिए था। अब आप हुक्म दें तो हम जाकर उन्हें भी लौटा लाने की कोशिश करें।" इस पर कमाण्डर साहब सोच में पड गए और फिर उन्होंने आज्ञा दे दी।

माँगा । स्वरूप सिहू ने आँखें खोलकर उस सैनिक की ओर देखा और पानी

सैनिक पानी पिलाकर आगे बोला, "कमाण्डर साहब की आज्ञा पाते ही वे दोनों तुरन्त चौकी की ओर भागे, जहाँ आप मोर्चा जमाए हुए थे। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि दुश्मन भाग चुका है और आप बेहोश पडे हैं। वे आपको तुरन्त उठाकर यहाँ ले आए। आप वहाँ अकेले ही सात घण्टे तक दुश्मन का मुकाबला करते रहे।"

"वे दोनों कहाँ हैं ?" स्वरूप सिंह ने पूछा।

"वे दोनों सैनिक आपको यहाँ हमारे हवाले करके फौरन मोर्चे पर चले गए," सैनिक ने उत्तर दिया, "अब आप चिन्ता न करें। हमने आपकी मलहम-पट्टी कर दी है और हेलिकाप्टर के आते ही हम आपको सदर अस्पताल भेज देंगे।"

"नहीं,..... मैं मोर्चे पर जाऊंगा। "दुश्मन को भगाना है," स्वरूप सिंह ने सिर हिलाकर जिद करते हुए कहा।

सैनिक ने समझाया, "दुश्मन को जरूर भगाना है, पहले आप ठीक तो हो लें। तब तक हमारे दूसरे जवान लड रहे हैं।

"नहीं; में अस्पताल नहीं जाऊँगा," स्वरूप सिंह ने क्षीण ध्वनि में कहा, "मैं अपने जवानों के साथ रहूँगा।"

"अच्छा-अच्छा," सैनिक ने सान्त्वना दी, "आप जवानों के ही साथ रहना। अभी आराम कीजिए। कमज़ोरी बढ़ रही है। अधिक न बोलें।" स्वरूप सिंह चुप हो गए। उन्होंने इशारे से पानी माँगा। सैनिक ने पानी पिलाया।

लेकिन कमज़ोरी बढ़ती ही चली गई। गोलियों के जहर ने असर दिखाना शुरू कर दिया। आधे घण्टे बाद ही स्वरूप सिंह का चेहरा स्याह पडने लगा।

अब क्या किया जाए ? सैनिक घबरा गए। हेलिकाप्टर पर ही एक- मात्र आशा बंधी थी। अस्पताल भेजने का कोई अन्य चारा न था।

स्वरूप सिंह ने कराहकर पानी माँगा। सैनिक ने पानी पिलाया। पानी पीकर स्वरूप सिंह ने हकलाते हुए पूछा, "मैं ठीक हो जाऊँगा न ?" "हाँ-हाँ, आप जल्दी ही ठीक हो जाएंगे, "सैनिक ने सान्त्वना देते हुए उत्तर दिया। "तब तो..... मैं फिर दुश्मन से लड सकूंगा।"

"अवश्य, आप जैसे वीर योद्धा के बल पर ही तो हमारी मातृभूमि की रक्षा हो सकती है," सैनिक ने उन्हें उत्साह दिलाते हुए उत्तर दिया, परन्तु स्वरूप सिंह के स्याह पडते चेहरे और लडखडाती जबान को देखकर उसकी उम्मीद टूटने लगी थी।

उसने बिना माँगे ही स्वरूप सिंह को पानी पिलाया। पानी का घूंट गले के नीचे जाते ही स्वरूप सिंह ने आँखें खोल दी और चारों ओर देखने

लगे। सामने सैनिक को देखकर उन्होंने इशारे से उसे बुलाया।

सैनिक के निकट आते ही स्वरूप सिंह ने उसका हाथ पकङ लिया और कहा, "मातृभूमि की रक्षा करना पहला कर्त्तव्य .." "हाँ, मातृभूमि की रक्षा करना पहला कर्त्तव्य है। हम मातृभूमि के लिए जिएँगे और उसी के लिए मरेंगे," सैनिक ने पूरी दृढ़ता से कहा। "क सम" स्वरूप सिंह आगे न कह पाए। सैनिक ने मुङकर अन्य सैनिक की ओर देखा। वह भी स्वरूप सिंह के निकट आ गया।

दोनों ने जमीन से चुटकी भर धूल उङाई और उस हाथ को ऊँचा करके कहा, "हम अपने देश की इस पवित्र मिट्टी की कसम खाते हैं कि जिन्दगी की अन्तिम साँस तक मातृभूमि की रक्षा करेंगे।"

दीपक की अन्तिम लौ की तरह स्वरूप सिंह का स्याह चेहरा एकबारगी दमक उठा, होठों पर मुस्कान आ गई।

उन्होंने क्षीण आवाज़ में कहा, "मैं अब बच नहीं सकता, लेकिन म अब भी दुश्मन से लङने को तैयार हैं।"

और इतना कहते ही उनका सिर एक ओर लुढ़क गया और उन्होंने सदैव के लिए आँखे मूंद लीं।

सिपाही बाजीराम थापा

कर्त्तव्य की पुकार

खाइयाँ जल्दी-जल्दी खोद दी गई और प्रत्येक खाई में तीन-तीन सैनिक मोर्चा जमाकर बैठ गए। दुश्मन अगली चौकी पार कर चुका था और आगे बढ़ा चला आ रहा था। उसे रोकना आवश्यक था, अन्यथा उसके सीधे वालोंग तक पहुँचने की आशंका थी।

दुश्मन तीन ओर से वालोंग घेरने का प्रयत्न कर रहा था। इसलिए बालोंग के तीनों ओर भारतीय सेना की टुकड़ियाँ भेज दी गई थीं। पश्चिमी मोर्चे पर ५० सैनिक भेजे गए थे, जिन्होंने तत्काल खाइयाँ खोदकर मोर्चा जमा लिया था।

दुश्मन खाइयों से लगभग एक फर्लांग दूर रह गया था। दोपहर हो गई थी। सिपाही वाजीराम थापा और दो सैनिक एक खाई में बैठे राइफल भरकर दुश्मन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

चीनी सैनिक अब काफी निकट पहुँच गए थे और चट्टानों की आड़ लेने लगे थे।

"सावधान हो जाओ," बाजीराम ने साथियों से कहा, "दुश्मन आ गया है। तीनों तरफ ध्यान रखना।"

भारतीय सैनिक पहले ही चीनी सैनिकों का मुकाबला करने के लिए तैयार थे। चीनी सैनिकों ने मार के रेंज के अन्दर आते ही धुआँधार गोलियाँ चलानी आरम्भ कर दीं। बाजीराम थापा और उसके साथियों की मौन राइफलें भी गरज उठीं।

भारतीय सैनिक नीचाई पर थे और चीनी सैनिक ऊँचाई पर। फिर भी भारतीय सैनिकों की आग बरसाती राइफलें उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थीं। यह देखकर वे चारों ओर फैलने लगे।

बिल्कुल बाईं ओर से गोलियाँ आते देखकर बाजीराम का माथा ठनका। हो न हो, दुश्मन बाईं ओर से बढ़कर खाइयों के पीछे पहुँचने का प्रयत्न कर रहा है। ऐसी दशा में भारतीय सैनिक घिर जाएँगे।

गोलियों की बौछार इतनी तेज आ रही थी कि बाजीराम सिर उठा

कर देख नहीं सकता था, फिर भी उसने एक साथी से कहा, "तुम अन्दाजे से बाईं ओर फायर करो। मैं दुश्मन को देखने का प्रयत्न करता हूँ।"

साथी ने चेतावनी दी, "होशियार रहना," और तेजी से बाईं ओर गोलियाँ छोङने लगा । बाजीराम ने थोङा-सा उठकर देखना चाहा, परन्तु एक साथी पर ८-१० गोलियाँ एक साथ लगीं और वह वहीं पर धराशायी हो गया।

"मोर्चा बदलो," बाजीराम चिल्लाया और रेंगता हुआ खाई की दूसरी ओर बढ़ा।

दूसरे साथी ने भी खाई की दूसरी ओर जाने का प्रयत्न किया, परन्तु सुरक्षित स्थान पर पहुँचने से पहले ही वह भी दुश्मन की गोलियों का शिकार हो गया।

अब बाजीराम अकेला रह गया। चीनी सैनिकों ने उसे तीन ओर से घेर लिया। सामने से चीनी सैनिक गोलियाँ बरसाते हुए आगे बढ़ रहे थे । बाईं और दाहिनी ओर से भी वे खाई के काफ़ी निकट आ गए थे । खाई के तिरछे मोङ के कारण ही बाजीराम अब तक बचा हुआ था। परन्तु अब बचना असम्भव था ।

बाजीराम समझ गया कि अब कुछ ही मिनटों में वह चारों ओर से घिर जायगा। उसका मन कङा हो गया।

"जय पशुपति नाथ की," उसने आँखें बन्द करके मन-ही-मन भगवान पशुपति नाथ का स्मरण किया और खाई से कूदकर पूर वेग से दोनों ओर के चीनियों के बीच से भागा ।

चीनियों ने तुरन्त धङाधङ गोलियाँ दाग दीं। सनसनाती हुई एक गोली बाजीराम को जा लगी और वह वहीं पर लुढ़क गया ।

मैदान साफ हो गया था। चीनी सैनिक निश्चिन्त और निर्विघ्न आगे बढ़ने लगे। बीच में बाजीराम का खून से लथपथ शरीर पङा था । चीनी उसे ठोकरें मारते हुए आगे बढ़ गए ।

उनके काफी आगे निकल जाने के बाद बाजीराम ने आखें खोलीं । उसके शरीर से काफी खून निकल चुका था और गोली भी अभी उसके शरीर के अंदर हँसी हुई थी। उसमें उठने तक की शक्ति नहीं रह गई थी।

दुश्मन आगे बढ़ गया है। अब वह जरूर वालोंग तक पहुँच जायगा। ओह ! अब मैं क्या करूँ ? बाजीराम ने सोचा, नहीं, मेरे जीते जी दुश्मन

आगे नहीं बढ़ सकता। मैं उसे अवश्य रोकूंगा।

सोचते-सोचते बाजीराम का खून उबलने लगा। उसने उठने की कोशिश की। कुछ उठा भी पर फिर धड़ाम से गिर पड़ा।

वह असहाय-सा चारों ओर देखने लगा। १४,००० फुट की ऊँचाई पर बर्फानी हवा से उसका शरीर अकड़ गया था। दर्द, कमजोरी और थकान से वह चूर था। लेकिन उसके दिमाग में बिजली की तरह विचार दौड़ रहे थे। दुश्मन आगे बढ़ गया है। वह अवश्य ही वालोंग तक पहुँच जायगा। तब वहाँ भी घमासान युद्ध होगा। कौन जाने वालोंग में अभी पूरी तरह तैयारी न हो। कौन जाने अभी वालोंग में पता भी न हो कि दुश्मन कितनी अधिक संख्या में किस चालाकी से आगे बढ़ रहा है। नहीं, चाहे कुछ भी हो, मुझे दुश्मन से पहले ही वालोंग पहुँच जाना चाहिए और कमाण्डर साहब को शत्रु की पूरी रिपोर्ट दे देनी चाहिए। मुझे कोई छोटा रास्ता देखना चाहिए, जिससे में दुश्मन से पहले पहुँच सकूं। मुझे शत्रु की पूरी जानकारी है। यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं अपने सदर मुकाम पर पूरी रिपोर्ट दूं।

यह सोचते ही बाजीराम ने फिर उठने का प्रयत्न किया, परन्तु उसके पैर लड़खड़ा गए। उसमें खड़े होने तक की शक्ति नहीं रह गई थी। वह पेट के बल सरकने लगा।

"कुछ देर बाद इस तरह सरकते-सरकते उसके शरीर में गर्मी आ गई। वह धीरे-से थोड़ा उठकर हाथ-पैर के बल चलने लगा।

कुछ दूर नदी थी। बाजीराम नदी के उस बर्फानी पानी में उतरा। नदी पार करके उसने पीछे मुड़कर देखा। स्वभावतः वह सतर्क था। उसने देखा कि कुछ चीनी सैनिक तेजी से उसकी ओर चले आ रहे हैं। दो मिनट में ही वे इतने निकट आ सकते थे कि बाजीराम आसानी से उनकी गोली का शिकार हो जाता।

जाने कहाँ से बाजीराम में बिजली की-सी ताकत आ गई। वह दूर एक चट्टान की आड़ लेने भागा।

उसे स्वयं ही अपने पर आश्चर्य हुआ कि वह इतनी तेजी से कैसे भाग सका। उसने आड़ से झाँककर देखा - चीनी सैनिक अभी नदी पार कर रहे थे।

बाजीराम उनकी नजर बचाकर तेजी से दूसरी चट्टान की ओर

भागा। फिर उसने रास्ता काटकर तीसरी चट्टान की आड़ ली और फिर चौथी।

वहाँ से उसने देखा कि चीनी सैनिक इधर-उधर देखकर अनुमान लगा रहे हैं कि वह किस ओर भागा है। दर्द और थकान के बावजूद भी चानियों को देखकर उसके होठों पर मुस्कान आ गई। तो वे चकमे में आ गए हैं। चलो अच्छा हुआ। अब जल्दी-से-जल्दी वालोंग पहुँचना चाहिए, बाजीराम ने सोचा।

पहाड़ों और जंगलों में चारों तरफ चीनी फैले हुए थे। बाजीराम चारों ओर सतर्कता से देखता हुआ आगे बढ़ा और चीनियों से बचता हुआ अपने सदर मुकाम पहुँच गया।

हवलदार मेजर सौदागर सिह

विजय उपहार

भारत की पवित्र भूमि पर चीन के पैशाचिक आक्रमण का वह ऐतिहासिक दिन-२० अक्तूबर १६६२ । वह दिन चीन के काले कारनामे और भारत के बीर सैनिकों के शौर्य के लिए विश्व-इतिहास में सदैव याद किया जाता रहेगा ।

१६ अक्तूबर की शाम को कई स्थानों पर चीनी सैनिकों की छोटी- छोटी टुकडियाँ भारतीय इलाके में देखी गईं। हमारे पहरेदारों ने जब उन्हें टोका तो उन्होंने 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे लगाए और वापस लौट गए। परन्तु २० अक्तूबर को सूर्य की पहली किरण भी नहीं फूटी थी कि नेफा में थाग ला पहाडी क्षेत्र और लद्दाख की अनेक भारतीय चौकियों पर हजारों चीनी सैनिकों ने एक साथ हमला कर दिया।

इन्हीं में से एक चौकी नामका चू नदी के तीसरे पुल पर थी। वहाँ हवलदार मेजर सौदागर सिंह और दो सैनिक तैनात थे ।

अचानक हमला । एक ओर ढाई सौ चीनी सैनिक आटोमैटिक राइफलें लिए और दूसरी ओर केवल तीन भारतीय सैनिक साधारण राइफलें और कुछ हथगोले लिए हुए ।

अब क्या किया जाए ? तीनों जवानों ने मोर्चा जमा लिया और दुश्मन पर गोलियाँ बरसाने लगे ।

दुश्मन सहम गया। वह समझ गया कि मोर्चे पर जब तक एक भी भारतीय जवान मौजूद है, आगे बढ़ना असम्भव है। वह चौकी को दाएँ- बाएँ से घेरने लगा।

"दुश्मन संख्या में बहुत है। ध्यान रखना कि वह मोर्चे को घेरने न

'पाए," सौदागर सिंह ने अपने दोनों साथियों को चेतावनी दी । परन्तु अभी वे सतर्क भी न हो पाए थे कि एक साथी चीनी सैनिकों की बौछार से वहीं ढेर हो गया ।

"ओह, दुश्मन अब अधिक दूर नहीं है। बाईं ओर से वह मुश्किले से पच्चीस गज रह गया है," बचे हुए साथी ने कहा और तत्काल एक

हथगोला निकालकर दुश्मन की ओर फेंका। हथगोला फटा और लगभग एक दर्जन चीनी सैनिक वहीं धराशायी हो गए।

"शाबास !" सौदागर सिंह ने खुश होकर कहा और अपने आप भी एक हथगोला निकालकर पूरे जोर से सामने फेंका। चीनी सैनिकों की अगली पंक्ति वहीं ढेर हो गई। लेकिन दाहिनी ओर से एकाएक गोलियों की बौछार आई और सौदागर सिंह का वह दूसरा और एकमात्र साथी भी काल-कवलित हो गया।

अब सौदागर सिंह अकेले रह गए। चीनी सैनिक दाहिनी ओर से इतने आगे बढ़ आए थे कि सौदागर सिंह किसी भी समय उनकी गोलियों के शिकार हो सकते थे।

"अब मोर्चा बदलना जरूरी है," सौदागर सिंह ने सोचा और तुरन्त अपनी जगह से उछलकर एक छोटी-सी चट्टान के पीछे पहुँच गए। चीनी आगे बढ़ते आ रहे थे। सौदागर सिंह ने तेजी से हथगोले फेंकने शुरू कर दिए, परन्तु कुछ देर बाद हथगोले भी समाप्त हो गए। उन्होंने फिर राइफल थाम ली और दनादन गोलियाँ छोड़ने लगे।

चीनियों ने अपनी ओर आती हुई गोलियों से अन्दाजा लगा लिया कि मोर्चे पर अब केवल एक सैनिक है। वे और तेजी से आगे बढ़ने लगे। एक चीनी सैनिक तो काफी निकट पहुँच गया। सौदागर सिंह ने ट्रिगर दबाया; उसे वहीं ढेर कर दिया। दूसरे चीनी ने तत्काल उसकी राइफल उठाई और आगे बढ़ा। सौदागर सिंह ने उसे भी वहीं मार गिराया। उसके गिरते ही तीसरे ने राइफल उठाई और आगे बढ़ा। अब वह केवल दस कदम दूर रह गया था। सौदागर सिंह ने निशाना साधा और राइफल का घोड़ा दवा दिया। राइफल 'टक' करके रह गई।

हैं! यह क्या ? सौदागर सिंह ने जल्दी-जल्दी अपनी जेबें टटोली। एक भी गोली वाकी नहीं बची ? अब क्या किया जाए ? सौदागर सिंह के दिमाग में विचार बिजली की तरह दौड़ने लगे। शत्रु केवल पाँच कदम पर था, आटोमैटिक राइफल से लैस।

"मरना ही है तो इस तरह नहीं, दुश्मन को मारकर ही मरूँगा।" सौदागर सिंह ने सोचा और एकाएक चट्टानों की आड़ से कूदकर शत्रु पर झपटे।

चीनी सैनिक अपने सामने भारतीय जवान को देखकर हक्का-बक्का

रह गया और इससे पहले कि वह सँभले, सौदागर सिंह ने अपनी राइफल की संगीन उसके पेट में घुसेड़ दी। वह गिर भी न पाया था कि सौदागर सिंह ने उसकी आटोमैटिक राइफल पर अधिकार कर लिया और सामने से आने वाले चीनियों पर दनादन गोलियाँ बरसाने लगे।

ऐसी विषम परिस्थिति में भारतीय जवान का यह करिश्मा ! दुनिया के इतिहास में ऐसे उदाहरण मिलने मुश्किल हैं।

लेकिन बात अभी खत्म नहीं हुई। ऊपर जो कुछ बताया गया है, वह तो कुछ ही क्षणों में घट गया। अन्य चीनी सैनिक जब तक निशाना साधें, सौदागर सिंह उसी आटोमैटिक राइफल से २०-२५ चीनी सैनिकों को मारकर वापस चट्टान की आड़ में आ गए। सारे चीनी सैनिक ठगे-से रह गए।

और फिर भारत माता का वह सपूत उन कायर चीनी सैनिकों को उन्हीं की आटोमैटिक राइफल से भूनता हुआ तेजी से चट्टानों की आड़ लेता हुआ अपने सदर मुकाम पहुँच गया। चीनी सैनिक हाथ मलते रह गए।

हवलदार मेजर सौदागर सिंह के पास आज भी वह आटोमैटिक - राइफल है, जो उन्होंने उस चीनी सैनिक से छीनी थी। अब उन्हें जमादार बना दिया गया है।

और आज जमादार सौदागर सिंह को अपने उस 'विजय उपहार' पर गर्व है और उनके जिले आजमगढ़ ही नहीं बल्कि पूरे भारत को जमादार सौदागर सिंह पर गर्व है।

मृत्यु से सामना

"क्या मुझे आप सेना में भरती कर सकते हैं ? मैं चीनी दुश्मन का मुकाबला करना चाहता हूँ। बताइए न, कब भरती करेंगे मुझे ?" एक दस- वर्षीय बालक ने सैनिक अफसर से पूछा।

सैनिक अफसर चकित रह गया, बालक के इस प्रश्न पर। साथ ही गर्व से उसका सीन। फूल गया। ठीक है, नेफा में अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपनी जान का बाजा लगाने वाले रण-बाँकुरे सूबेदार जोगिन्दर सिह के पुत्र को भा ता अपने बाप को तरह बहादुर हाना चाहिए।

वह सनिक अफसर सरकार की ओर से फिरोजपुर जिले (पंजाब) के महल कलाँ गांव भजा गया था, जहाँ उसे सूबेदार जोगिन्दर सिंह के परि- बार बालों को खबर दना था कि नफा म सूबेदार साहब ने वोर-गति पाई है। अफसर ने जब यह खबर दी, तब सूबदार के दस वर्षीय पुत्र ने उक्त प्रश्न किया। बचारा अफसर क्या उत्तर दता ?

उस बालक के पिता सुबदार जागिन्दर सिंह नेफा में बूम ला के निकट तागंपेंग ला में तैनात थ। व वहा ३५ जवानों के एक दस्ते क कमाण्डर थे आर तोंगरंग ला तथा उसका घाटा को रक्षा के लिए मोर्चा जमाए हुए थे।

२० अक्तूबर १६६२ को चोनियों ने विशाल संख्या में आकर नेफा और लद्दाख का अनक चौकियों पर एक साथ हमला किया और नेफा की ढाला, सागधर तथा खिजामने चौकियों पर कब्जा कर लिया। फिर २२ अक्तूबर को उन्हान किंबुतू भी ले लिया और अब वे तवांग में घुसने के इरादे से बूम ला पर हमला करना चाहते थे।

सूबेदार का इसकी खबर मिल गई थी। इसलिए वे हमलावरों को रोकने लिए तैयार हो गए।

"जवानो ! दुश्मन हमारी चौकी पर किसी भी क्षण हमला कर सकता है। हमें हर समय सतर्क रहना है। दुश्मन को किसी भी हालत में आगे नहीं बढ़ने देना है। हमारे रहते दुश्मन आगे बढ़ जाए, यह नहीं हो सकता," सुबेदार ने अपने जवानों को ललकारा।

"सूबेदार साहब ! हम जान की बाजी लगा देंगे, पर दुश्मन को आगे नहीं बढ़ने देंगे," एक सैनिक ने कहा।

"सूबेदार साहब ! जब तक हमारे हाथ में राइफल है और हमारे शरीर में खून की एक बूंद भी शेष रहेगी, तब तक दुश्मन यहाँ से आगे नहीं बढ़ सकेगा, दूसरे सैनिक ने कहा।

"शाबास मेरे जवानो ! अपनी मातृभूमि के गौरव, सम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा में जरा-सी चूक से बहुत बङा नुकसान हो सकता है। हमें सतर्क रहना है। दुश्मन कभी भी आ सकता है," सूबेदार ने कहा।

और सूबेदार को जो आशंका थी, वही हुआ। २३ अक्तूबर की सुबह को अभी तोगपेंग ला के दरें और घाटी से कुहरा भी नहीं हटा था कि दुश्मन ने भारी सख्या में आकर शोर मचाते हुए एकदम हमला बोल दिया।

परन्तु यहाँ भी सब सतर्क थे। दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी। सूबेदार को हल्की मशीनगन और सैनिकों की राइफल की गालियो के सामने चीनी हमलावरों की घिग्गी बँध गई। दो घण्टे के अन्दर ही दुश्मन साफ हो गया। जो थोङे बचे रहे, वे भाग खङे हुए। मोर्चे पर एक भी बाकी न रहा।

भारतीय सैनिकों ने जरा राहत की साँस ली और राइफलें छोङकर उँगलियाँ चटकाने लगे।

"सूबेदार साहब, बधाई, दुश्मन साफ हो गया," निकट के एक सैनिक ने कहा।

सूबेदार मुस्कराए। सैनिक आराम से पसीना पोंछते हुए अंगङाई लेने लगे। काफी दर से लेटे-लेटे राइफल चलाने से वे कुछ थक गए थे।

परन्तु अभी पन्द्रह मिनट भी नहीं बीते थे कि उन्हें घाटी से "हिन्दी चीनी भाई-भाई' का शोर सुनाई दिया।

"खबरदार, दुश्मन फिर आ गया," सूबेदार ने सैनिकों को चेतावनी दी, "यह शायद उनका दूसरा दस्ता है। एक भी..."

वे अपनी बात पूरी भी न कर पाए थे कि दुश्मन की ओर से गोलियों की बौछार आने लगी। भारतीय सैनिकों ने भी दनादन गोलियाँ छोङनी गुरू कर दी। दुश्मन ठिठककर रुक गया और इधर-उधर छिपने लगा। आगे बढ़ना उसके लिए असम्भव हो गया था।

जब दुश्मन ने देखा कि इस तरह आगे बढ़ना असम्भव है, तब उसने दूसरी चाल चली। अनेक सैनिक घाटी के दोनों ओर की दुर्गम पहाडी पर चढ़ने लगे, ताकि वे ऊपर से खाई में छिपे भारतीय सैनिकों पर सीधे गोलियाँ बरसा सकें।

सुबेदार सतर्क थे । वे दुश्मन की चाल भाँप गए। उन्होंने तुरन्त पहाडी की ओर अपनी मशीनगन का मुँह मोड दिया और गोलियाँ बरसाने लगे, परन्तु जो चीनी सैनिक पहले ही छिप गए थे, उन्होंने ऊपर से गोलियाँ चलाकर अनेक भारतीय जवानों को मार डाला। एक गोली सनसनाती हुई आकर सुबेदार की जाँघ पर भी लगी। लेकिन इससे किसी का भी हौसला कम नहीं हुआ; यही नहीं, बल्कि वे दुगुने जोश से दुश्मन का सामना करने लगे।

और अन्त में दुश्मन के २०० सैनिकों का यह दल भी साफ हो गया। मोर्चे पर कुछ देर के लिए फिर शान्ति छा गई। सैनिक अपने घावों पर पट्टियाँ बाँधने लगे । सहसा एक सैनिक की निगाह सूबेदार की खून से लथ- पथ पैट पर पडी।

उसने घबराकर कहा, "सूबेदार साहब, आपकी पैंट भीग गई है। गहरी चोट लग गई शायद। आप सदर पडाव चले जाएँ। वहाँ अच्छी तरह मलहम-पट्टी हो सकेगी। अब यहाँ दुश्मन तो साफ हो ही गया है।"

"नहीं, दुश्मन बहुत चालाक है," सूबेदार ने दृढ़ता से कहा, "वह अभी तीसरा हमला भी कर सकता है।"

"आप चिन्ता न करें, मोर्चा हम सँभाल लेंगे," हवलदार मेजर ने कहा, "आपकी मलहम-पट्टी जरूरी है। घाव गहरा है। दो सिपाही आपको सहारा देकर ले जाएँगे।"

"फिक्र मत करो," सूबेदार ने हँसकर टालते हुए कहा, "मामूली-सी चोट है। लो पट्टी बाँध लेता हूँ। मगर यह नहीं हो सकता कि अपने जवानों को छोडकर चला जाऊँ। मैं... सावधान !"

सूबेदार के चिल्लाते ही सब लेट गए। सबने अपनी-अपनी राइफलें तान लीं। सूबेदार इतने सतर्क थे कि दूर से आते दुश्मन को भाँप गए थे। उन्होंने बड से सिर तिरछा करके देखा, दुश्मन छिपता हुआ काफी नजदीक पहुँच चुका था। सूबेदार ने मशीनगन मोडकर उधर गोलियाँ छोडनी शुरू कर दीं। अन्य सैनिक भी आड लेकर गोलियाँ चलाने लगे।

दुश्मन ने यह तीसरी बार हमला किया था। इस बार वे एक हजार से कम नहीं थे। वे पाँच-पाँच के दस्ते में आगे बढ़ रहे थे। अगले पाँच के मरने पर पीछे के पाँच निहत्थे सैनिक उनकी राइफलें उठाते और आगे बढ़ते; उनने मरने पर उनसे पीछे के पाँच निहत्थे सैनिक उनकी राइफलें उठाते और अपने मृत-अर्द्धमृत साथियों के शरीरों को रौंदकर आगे बढ़ते। यह क्रम निरन्तर चल रहा था।

अन्त में वे भारतीय सैनिकों के मोर्चे के बिल्कुल निकट पहुँच गए। सैकडों चीनी मर चुके थे और पीछे के सैनिक उन्हें रौंदकर आगे बढ़ते चले आ रहे थे। और अब वे इतने निकट पहुँच चुके थे कि भारतीय सैनिकों के लिए खाइयों में छिपा रहना असम्भव हो गया।

"दुश्मन सामने आ गया है," सूबेदार ने पूरी शक्ति लगाकर कहा, "जवानो, संगीनें चढ़ा लो !"

सभी बचे हुए सैनिकों ने अपनी राइफलों पर संगीनें चढ़ा लीं। सूबेदार जोगिन्दर सिंह एकाएक मोर्चे से कूदकर चीनियों पर ठीक उसी तरह टूट पडे जिस प्रकार भूखा सिंह हिरणों के समूह पर टूट पडता है। अन्य सैनिक भी उन्हें देखकर खाइयों से निकल-निकल कर संगीनें आगे किए चीनियों की ओर झपटे।

चीनी इस अप्रत्याशित हमले से हक्के-बक्के रह गए और मैदान छोडकर भागने लगे। परन्तु तभी एक ओर से सूबेदार पर गोलियों की बौछार आई और वे वहीं धराशायी हो गए।

सूबेदार जोगिन्दर सिंह ने जो अभूतपूर्व साहस और वीरता दिखाई, वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएगी। भारत सरकार ने उनकी अदम्य वीरता और साहस के लिए उन्हें परमवीर चक्र प्रदान किया।

●

परिशिष्ट १

भारत-चीन सम्बन्ध : प्रमुख घटनाएँ

चीन में १ अक्तूबर १६४६ को गंणराज्य की स्थापना हुई। भारत ने तत्काल उसे मान्यता दी। भारत उन थोडे-से देशों में था, जिन्होंने सबसे पहले चीन गणराज्य को मान्यता दी।

७ अक्तूबर १६५० को चीन की सेनाएँ तिब्बत में घुस गई और उन्होंने तिब्बत पर अपना अधिकार जमा लिया। तिब्बत को हडपने के बाद ही चीन की लोलुप दृष्टि भारत के उत्तरी इलाके पर पडने लगी।

१७ जुलाई १६५४ को चीनी सरकार ने इसका विरोध किया कि बडाहोती (जिसे वे 'वूजे' कहते हैं) में भारतीय सेनाएँ हैं। इस प्रकार उसने पहली बार भारत के एक इलाके पर अपना दावा किया।

१८ अक्तूबर १६५४ को प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने चीन की सद्भावना-यात्रा की। इसी यात्रा के दौरान नेहरूजी ने चीनी नेताओं से उन चीनी नक्शों का जिक्र किया, जिनमें भारत-चीन सीमा गलत दिखाई गई थी और भारत का ५० हजार वर्ग मील इलाका चीन में दिखाया गया था। उत्तर में श्री चाउ-एन- लाई ने इनको कोई महत्त्व नहीं दिया और कहा कि वे नक्शे कुमिताँग की नकल- मात्र हैं और चीन गणराज्य सरकार को उन्हें संशोधित करने का समय नहीं मिल पाया है।

१६५५ : चीन ने अपनी आक्रामक कार्रवाइयों शुरू कर दीं। उसके एक दल ने बडाहोती में डेरा डाल दिया। भारत ने विरोधपत्र भेजा, पर चीन ने ध्यान नहीं दिया। फिर १५ सितम्बर को चीनी सैनिक उत्तर प्रदेश की सीमा पार करके १० मील अन्दर दामजन में घुस आए। भारत ने फिर विरोधपत्र भेजा।

१६५६ : २८ अप्रैल को चीनी सैनिकों ने नीलंग से आधा मील दूर अपना खेमा लगाया। २६ जुलाई को चीन सरकार ने दावा किया कि बडाहोती उसका है। १ सितम्बर को चीनी सैनिकों ने शिपकी दर्रा पार किया और २० सितम्बर को वे हुपसांग खंड तक पहुँचे। भारत ने फिर विरोधपत्र भेजे।

नवम्बर १६५६ में चीन के प्रधान मन्त्री श्री चाउ एन-लाई भारत-यात्रा पर आए और उन्होंने प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से सीमा-सम्बन्धी वार्ता कर,

यह घोषणा की कि - "दोनों देशों के बीच सीमा का कोई झगडा नहीं है। जो छोटी- छोटी समस्याएँ हैं, उन्हें दोनों सरकारों के प्रतिनिधियों को मिलकर मित्रतापूर्वक

सुलझा लेना चाहिए।" १६५७ : अक्तूबर १६५७ में फिर चीनी सैनिक नेफा में बालोंग तक उत्तर

आए । १६५८ : भारत सरकार के कहने पर दोनों सरकारों के प्रतिनिधियों ने बडाहोती के प्रश्न पर विचार किया। इसी बीच चीनी सैनिकों ने लद्दाख में खुरनाक फोर्ट पर कब्जा कर लिया। फिर सितम्बर में अकसाई चिन के उत्तर में गश्त लगाने वाली भारतीय टुकडी को चीनी सैनिकों ने पकड लिया और उनके साथ दुव्यवहार किया। इसी महीने चीनियों का एक बडा दल बडाहोती में अपनी इमारतें बनाने के लिए सामान लेकर बडाहोती पहुँच गया। इसी बीच चीन ने लद्दाख के अक्साई चिन इलाके में मोटर-सडक भी बना दी थी। भारत सरकार ने फिर विरोधपत्र भेजे ।

अक्तूबर में चीनियों ने उत्तर प्रदेश के तपथाल और संगचामल्ला में अपनी चौकियाँ बनाई। इसी महीने चीनी विमानों ने स्पिति घाटी और हिमाचल प्रदेश की उडान की ।

भारत सरकार ने चीन सरकार को लिखा कि वह बडाहोती, तापथाल और संगचामल्ला से अपने कर्मचारी हटा ले। नेहरूजी ने भी चीनी प्रधान मन्त्री का ध्यान उस चीनी सरकारी पत्रिका की ओर दिलाया, जिसमें भारत-चीन सीमा को गलत ढंग से दिखाया गया था और लिखा कि इससे भारत को उलझन हो रही है, अतः दोनों देशों के बीच किसी गम्भीर ग़लतफहमी की सम्भावना को जल्ली-से-जल्दी दूर करने के लिए कार्रवाई की जानी चाहिए ।

१६५६ : भारत सरकार ने और भी अनेक विरोधपत्र भेजे । २३ जनवरी को चीन के प्रधान मन्त्री ने नेहरूजी को लिखा कि, "भारत-चीन सीमा कभी औप- चारिक रूप से निर्धारित नहीं की गई और दोनों देशों में सीमा के बारे में कुछ मतभेद हैं। १९५४ में चीन सरकार ने यह सवाल इसलिए नहीं उठाया, क्योंकि उस समय समझौते के लिए उचित परिस्थितियाँ नहीं बन पाई थीं।" उन्होंने यह भी लिखा कि चीन सरकार ने मैकमहाँन रेखा को कभी भी मान्यता नहीं दी ।

इस प्रकार चीन सरकार ने दोनों देशों के बीच सदियों से चली आई निर्धारित सीमा को मानने से इन्कार कर दिया। यही नहीं बल्कि उसने १६५४ के समझौते को -तथा अनेक बार दिए गए आश्वासनों को ठुकराकर भारत के ५०,००० वर्ग मील

इलाके पर भी अपना दावा ठोंक दिया।

इसके बाद भी चीन ने लद्दाख और नेफा में घुसपैठ जारी रखी ही, साथ ही उसने हमारी अनेक चौकियों पर छिटपुट हमले करके हमारे सीमारक्षकों को भी मारा। २८ जुलाई को चीनी सैनिकों ने पेंगांग झील के निकट ६ भारतीय सीमारक्षकों को पकड़ा; स्पांगुर में अपना कैम्प लगाया; ७ अगस्त की नेफा में खिजमाने में घुसे; २५ अगस्त को नेफा के सुबनसिरी डिविजन में गोलियाँ चलाईं तथा लाँगजू पर कब्जा किया; और २० अक्तूबर को कोंगका दर्रे के पास ६ भारतीयों को मारा तथा १० को पकड़ा और उन पर अमानुषिक अत्याचार किए।

भारत सरकार सीमा-विवाद को शान्तिपूर्वक सुलझाने के लिए निरन्तर उत्सुक और तत्पर रही। उसने चीन सरकार को कुछ सुझाव भी भेजे, परन्तु चीन सरकार ने वे प्रस्ताव ठुकरा दिए। यही नहीं बल्कि उसकी सेना अक्साई चिन इलाके के दक्षिण और पश्चिम में और आगे बढ़ गई तथा वहाँ सड़क बनाने लगी।

१६६० : फरवरी १६६० में प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने सीमा-

विवाद का शान्तिपूर्ण समाधान ढूंढने के लिए श्री चाउ एन-लाई को दिल्ली आने का निमन्त्रण दिया। अप्रैल में श्री चाउ एन-लाई दिल्ली आए और उन्होंने ६ दिन तक नेहरूजी से बातें कीं। अन्त में दोनों प्रधान मन्त्रियों ने घोषणा की कि वे मतभेदों को समाप्त करने में सफल नहीं हो पाए; अतः दोनों देशों के अधिकारी अपनी-अपनी सरकारों के दावों के समर्थन से सम्बन्धित सभी कागज-पत्रों पर विचार करने के लिए मिलें। लेकिन इस बीच सीमा पर किसी तरह का संघर्ष न होने देने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

परन्तु ३ जून को भारी संख्या में चीनी सैनिक कामेंग डिविजन (नेफा) में ५ मील अन्दर ताक्तसाँग गोम्पा में घुस आए; २२ सितम्बर को उन्होंने सिक्किम के समीप जिलपिला दर्रा पार किया; और १३ अक्तूबर को चीनी सैनिक दल लद्दाख के हॉट स्प्रिंग में घुसा।

१६६१ : दोनों देशों के अधिकारियों ने सीमा के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट दी, उसमें यह बात स्पष्ट थी कि चीन ने लगभग ५०,००० वर्ग मील पर जो दावा किया है, वह गलत है। रिपोर्ट से यह भी स्पष्ट था कि चीन ने भारत के १२,००० वर्ग मील पर अनधिकृत रूप से कब्जा कर रखा है।

मई में चीनी चुकूल (लद्दाख) के निकट भारतीय इलाके में घुसे। फिर जुलाई में कामेंग डिविजन में चेमोकारपोला के एक मील पश्चिम में आए; अगस्त में चीनी सैनिकों ने लद्दाख में न्याग्जू और दम्बगुरु के निकट तीन चौकियाँ बनाई और

पिछले मुख्य मुकामों से इन चौकियों तक सड़कें बनाईं।

भारत सरकार ने चीन सरकार का ध्यान इस ओर दिलाया कि चीनी सैनिकों ने कई बार भारतीय सीमा का उल्लंघन किया, वे भारत के एक बहुत बड़े इलाके पर कब्जा किए बैठे हैं और भारतीय इलाके में सड़कें बना रहे हैं।

१६६२ : जनवरी में चीनी लोंगजू के निकट भारतीय सीमा में घुसे और रोई गाँव की ओर बढ़े; अप्रैल में वे लद्दाख के चिपचैप इलाके में गश्त लगाने लगे; मई में उन्होंने स्पांगुर के दक्षिण में एक और चौकी बनाई; फिर गलवान नदी के निकट एक भारतीय चौकी को घेरा; १४ अगस्त को चीनी सैनिकों ने पेंगांग झील के इलाके में घुसकर यूला चौकी पर गोलियां चलाईं; चीनियों ने अनेक नई चौकियाँ बनाई; ८ सितम्बर को चीनी सैनिक नेफा के थागला रिज में घुसे; १० अक्तूबर को चीनी सैनिकों ने नेफा की सीमा पर भारी गोलाबारी की और १६ अक्तूबर को ढोला क्षेत्र में भी गोलाबारी की।

.....और २० अक्तूबर १६६२ को चीनी सैनिकों ने नेफा तथा लद्दाख के अनेक स्थानों पर एक साथ भारी संख्या में आकर पैशाचिक आक्रमण कर दिया। उनके साथ टैंक, मशीनगन, भारी मोर्टार और अन्य आधुनिक फौजी सामान था तथा सैनिक आटोमैटिक राइफलों से लैस थे। उन्होंने नेफा में ढोला, खिजमाने, थागला रिज और तवांग मठ, तथा लद्दाख में चाँग ला और जरा ला हथिया लिया।

२४ अक्तूबर को चीन के प्रधान मन्त्री ने अपनी सुविधा के अनुसार त्रि-सूत्री प्रस्ताव रखा, जिसे प्रधान मन्त्री नेहरू ने नामंजूर कर दिया और इस पर जोर दिया कि जब चीनी सेना ८ सितम्बर १६६२ की सीमा तक लौट जाएगी, भारत तभी चीन के साथ बात कर सकेगा। भारत-चीन सीमा-विवाद को निपटाने के लिए संयुक्त अरब गणराज्य के प्रेसीडेण्ट नासिर ने २६ अक्तूबर को चार-सूत्री प्रस्ताव रखा, जिसे चीन के प्रधान मन्त्री ने ठुकरा दिया।

चीनी सेना ने जाँग और तवांग के जिन ३ गाँवों को हथिया लिया था, उन्हें भारतीय सेना ने ३ नवम्बर को वापस ले लिया। चीनी फौज ने ७ नवम्बर को वालोंग के समीप भीषण गोलाबारी की, जिसे भारतीय वीर सैनिकों ने विफल कर दिया। ६ नवम्बर को चीनी फौज ने वालोंग पर गोले बरसाए। भारतीय सैनिकों ने भी जाँग क्षेत्र में दुश्मन पर गोलाबारी की। फिर १४ नवम्बर को भारतीय सैनिकों ने बालोंग के निकट चीनी ठिकानों पर हमला बोल दिया और जाँग के निकट के एक गाँव को चीनियों के कब्जे से छुड़ा लिया। १५ नवम्बर को चीनी फौज ने बालोंग क्षेत्र पर भयंकर हमला कर दिया, जिससे भारतीय सैनिकों को कुछ पीछे हटना पड़ा।

१७ नवम्बर को चीनी फौज ने चुशूल क्षेत्र में भीषण गोलाबारी की। परन्तुगत भारी प्रयत्न करने के बाद भी वे चुशूल पर कब्जा न कर सके । वालोंग और चुशूल - में भारतीय रणबांकुरों ने जिस अदम्य साहस और वीरता से चीनी सेना का सामना किया उससे चीनियों को पता चल गया कि भारत की भूमि को हथियाना लोहे के चने चबाना है।

और २०-२१ नवम्बर १६६२ की अर्धरात्रि को चीन ने एकतरफा युद्धबन्दी की घोषणा कर दी ।

इसके बाद भारत-चीन-विवाद को सुलझाने के लिए लंका की प्रधान मन्त्रिणी श्रीमती श्रीमावो बण्डारनायके ने १० दिसम्बर १६६२ को कोलम्बो सम्मेलन बुलवाया, जिसमें बर्मा, लंका, संयुक्त अरब गणराज्य, नम्बोदिया, इण्डोनेशिया और घाना के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन ने जो प्रस्ताव पास किया, उसे भारत ने ज्यों-का-त्यों पास कर लिया, परन्तु चीन ने ठुकरा दिया ।

परिशिष्ट २

भारत-चीन सीमा

भारत और चीन के बीच लगभग २४०० मील लम्बी सीमा है, जो पश्चिम में अफगानिस्तान, भारत और तिब्बत के त्रि-संगम से लेकर पूर्व में बर्मा, भारत और तिब्बत के त्रि-संगम तक है। यह सीमा-रेखा लद्दाख की उत्तर-पूर्वी सीमा से लेकर पंजाब, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश की पूर्वी सीमा को छूती हुई सिक्किम, भूटान और नेफा की उत्तरी सीमा तक चली गई है। यह सीमा सदियों से चली आ रही है और जलविभाजक (वाटरशेड) के सिद्धान्त पर आधारित है अर्थात् दोनों देशों के बीच जो सबसे अधिक ऊँचे पर्वत हैं और जिनके एक तरफ की नदियाँ भारत की ओर तथा दूसरी तरफ की नदियाँ चीन की ओर बहती हैं, वही पर्वत भारत और चीन की सीमा हैं। सीमा पर खडे ये पर्वत १४,००० से २५,००० फीट तक ऊँचाई के हैं।

भारत-चीन सीमा को हम तीन मुख्य क्षेत्रों में बाँट सकते हैं- (१) पूर्वी क्षेत्र, (२) मध्य क्षेत्र और (३) पश्चिमी क्षेत्र।

पूर्वी क्षेत्र

पूर्वी क्षेत्र की सीमा भारत और तिब्बत (जो अब चीन में शामिल हो गया है) की परम्परागत सीमा-रेखा है, जो सदियों से चली आ रही है। इसका निर्धारण २४-२५ मार्च १६१४ को शिमला के त्रिपक्षी सम्मेलन में किया गया था। उसमें भाग लेने वाले ब्रिटिश प्रनिनिधि सर हेनरी मैकमहॉन के नाम पर ही इस सीमा-रेखा का नाम 'मैकमहॉन रेखा' पडा। २४ अप्रैल १६१४ को भारत, तिब्बत और चीन के प्रतिनिधियों ने एक करार पर हस्ताक्षर किए थे, जिसके साथ भारत-तिब्बत सीमा का नक्शा भी नत्थी था। मैकमहोंन ने यह कोई नई सीमा नहीं बनाई थी, बल्कि केवल परम्परा से चली आई सीमा को औपचारिक रूप दिया था।

यह सीमा ६५० मील लम्बी है, जो भूटान, भारत और तिब्बत के त्रि-संगम से लेकर बर्मा, भारत और तिब्बत के त्रि-संगम तक जाती है। इसके उत्तर में तिब्बत का पठार है और दक्षिण में नेफा। नेफा में मोनबा, अका, दफला, मीरी, अबोर और निश्मी आदि जातियाँ रहती हैं, जो तिब्बती लोगों से बिल्कुल भिन्न हैं।

मध्य क्षेत्र

मध्य क्षेत्र में भारत-चीन सीमा ३५० मील लम्बी है, जो ग्या चोटी से शुरू

होकर भारत, नेपाल और तिब्बत के त्रि-संगम तक पहुँचती है। यह परम्परागत रेखा है और इसके उत्तर में तिब्बत का आरी या नागरी खोसुम जिला है तथा दक्षिणा में पंजाब, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश।

पंजाब में इस सीमा पर काँगङा जिले के कुल्लू सबडिविजन का स्पिति वजीरी है। यहाँ की आबादी लगभग ६००० है और वे लोग बौद्ध लामा सम्प्रदाय (गेलुक्या मत) के अनुयायी हैं। स्पिति में अनेक बौद्ध विहार हैं।

हिमाचल प्रदेश का सीमावर्ती इलाका पुरानी बशहर रियासत है। बशहर की आबादी एक लाख के लगभग है, और वहाँ के निवासी कनेत जाति के हैं। जनता मुख्यतः हिन्दू धर्म की अनुयायी है। वहाँ भी मन्दिरों की संख्या बहुत है।

उत्तर प्रदेश के सीमावत्ती इलाके में टिहरी, गढ़वाल और अल्मोङा जिले हैं (अब इन जिलों को छः भागों में बाँट दिया गया है- उत्तरकाशी और टिहरी, चमोली और गढ़वाल, तथा पिथौरागढ़ और अल्मोङा; इस प्रकार अब सीमावर्ती इलाके में उत्तरकाशी, चमोली तथा पिथौरागढ़ जिले हैं)। वहाँ की कुल आबादी लगभग १६ लाख हैं। स्कन्द पुराण में इस इलाके को केदार क्षेत्र कहा गया है और इसे हिन्दुओं की पवित्र भूमि माना गया है।

पश्चिमी क्षेत्र

पश्चिमी क्षेत्र में भारत-चीन सीमा १००० मील लम्बी है, जो अफगानिस्तान, भारत और तिब्बत के त्रि-संगम से ग्या चोटी तक जाती है। यह भी परम्परागत सीमा है और जलविभाजक पर्वत-श्रेणियों के आधार पर है। चीन और तिब्बत ने १६८४ तथा १८४२ की संधियों में इस परम्परागत सीमा की पुष्टि की। १६५२ में कश्मीर के महाराजा तथा तिब्बत के प्रतिनिधियों ने जो समझौता किया था, उसमें भी इसी सीमा की पुष्टि की गई। इस सीमा के एक ओर सिकियांग और तिब्बत हैं तथा दूसरी ओर जम्मू-कश्मीर राज्य, मुख्यतः लद्दाख क्षेत्र।

लद्दाख, जम्मू-कश्मीर का एक जिला है, जिसे 'बजारत' कहते हैं। इसमें तीन तहसीलें हैं : लद्दाख, कारगील तथा स्कारदू। इस जिले में चम्पा, लद्दाखी, बाल्टी और दरड जाति के लोग रहते हैं।

परिशिष्ट ३

नेफा और लद्दाख भारत के अभिन्न अंग

नेफा और लद्दाख हमेशा से भारत के अभिन्न अंग रहे हैं। चीन ने इन इलाकों के जिन भागों पर अपना दावा किया है, वे प्राचीन काल से ही भौगोलिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के अंग हैं।

नेफा

नेफा में जो पुराने भग्नावशेष मिले हैं, उनसे पता चलता है कि पुराणयुग से ही यह भारत का भाग रहा है। कालिका पुराण की एक कथा में बताया गया है कि नरकासुर ने एक आदिम जाति के मुखिया घटक को हराया था और प्राग्जोतिषपुर (गौसली) में अपनी राजधानी बनाई थी। नरकासुर के पुत्र भगदत्त की कथा महा- भारत में मिलती है। उसे अर्जुन ने हराया था और बाद में कौरव-पाण्डव युद्ध के समय वह कौरवों की ओर से लडा था।

लोहित डिविजन में भीष्मक नगर है, जो राजा भीष्मक की राजधानी थी। भगवान् श्रीकृष्ण की रानी रुक्मिणी इन्हीं राजा भीष्मक की पुत्री थीं। इसी क्षेत्र में रुक्मिणी नगर, ताम्र श्वरी मन्दिर, शिव मन्दिर और परशुराम कुण्ड हैं। कहा जाता है कि इसी कुण्ड में परशुराम ने अपना फरसा घोकर पापमुक्त किया था।

कामेंग डिविजन में एक किले के खण्डहर पाए जाते हैं, जिसे वहाँ के लोग राजा बाण के पौत्र राजा भालुक का बताते हैं।

एक हिन्दू राजा ने सुबंसिरी डिविजन की एक पहाडी पर मायापुर में अपनी राजधानी बनाई थी। अब भी उस राजधानी के भग्नावशेष देखे जा सकते हैं।

बाद में इस क्षेत्र पर अहोम राजाओं का शासन रहा । सत्रहवीं सदी में लिखित "आसाम के राजनीतिक भूगोल' में बताया गया है कि आसाम की डाफला, अका और भोटिया जातियाँ अहोम राजाओं को कर देती थीं। इसी वंश के राजा पुरन्दर सिंह से अंग्रेजों ने १८२६ में आसाम जीता। टी० टी० कृपर (१८७३) और माइकेल (१८८३) के यात्रा-वर्णनों में और उन्नीसवीं शताब्दी की चीनी पुस्तकों तथा नक्शों (कैप्टन की चिआओ चुंग परिषद्द्वारा १८६३ में प्रकाशित 'ता सिग' नवशा) में भी व्यही बताया गया है कि इस आदिवासी क्षेत्र और तिब्बत के बीच हिमालय पर्वत की सीमा है।

१७११-१७१७ में चीनी सम्राट् काँग हि के समय बने नक्शों और १६२५ में पीकिंग विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित नक्शों में भारत की वही सीमा दिखाई गई है, जो आज है।

१८८१ की आसाम जनगणना रिपोर्ट, १८७३ का बंगाल पूर्वी सीमान्त रेगुलेशन १, १८८० का सीमान्त प्रदेश रेगुलेशन आदि से यही सिद्ध होता है कि पिछले अनेक वर्षों से उन सीमा क्षेत्रों पर भारत का शासन और अधिकार रहा है।

भारतीय सर्वे विभाग के १६११, १६१२, और १९१३ के विवरणों में भी नेफा के सर्वे का विवरण है।

१६१४ के शिमला सम्मेलन में भारत, चीन और तिब्बत के पूर्णाधिकारियों का सम्मेलन हुआ था। उसमें सीमा का जो नक्शा रखा गया था, उसे तीनों प्रति- निधियों ने स्वीकार किया और उस पर अपने हस्ताक्षर किए थे।

सद्दाख

नेफा की तरह लद्दाख भी हमेशा से भारत का अंग रहा है। यह जम्मू- कश्मीर का एक जिला है, जिसे 'वजारत' कहते हैं। इसमें लद्दाख, कारगीज और स्कारदू तीन तहसीलें हैं। इस जिले में चम्पा, लद्दाखी, बाल्टी और दरड जाति के

लोग रहते हैं।

चीन ने लद्दाख के बहुत बडे भाग पर अपना दावा सिद्ध करने के लिए कहा है कि तिब्बत और लद्दाख में धर्म और वंश की एकता है। उसका यह तर्क लचर और बेबुनियाद है। वास्तव में यहाँ बौद्ध धर्म का जो प्रसार हुआ, वह कश्मीर से हुआ, तिब्बत से नहीं। दूसरे, लद्दाखी शासक भी गर्व से कहते थे कि उनके पूर्वज भारतीय थे। इसी को बताने के लिए वे अपने नाम के आगे 'शाक्य' लिखते थे। वहाँ की अनेक ऐतिहासिक इमारतों पर खुदे लेखों में भारतीय राजा 'इक्ष्वाकु' का उल्लेख है और उन्हें लद्दाखी राजाओं का पूर्वज माना जाता है।

भारत में मुगल शासन होने पर लद्दाख के शासकों ने भी मुसलमानी नाम अपनाए। सत्रहवीं शताब्दी में वहाँ के एक शासक का नाम अक़बत मुहम्मद खाँ था। लद्दाल के लिए कश्मीर में सिक्के डाले जाते थे और वे सब सिक्के मुगल शैली के थे।

तिब्बती शासन के ज्ञाता परम विद्वान् लूसियानो हैतेच ने भी कहा है कि- "लद्दाख की ऐतिहासिक घटनाओं का उसके पडोसी भारतीय प्रदेश की घटनाओं से निकट सम्वन्य रहा है। मध्य तिब्बत के साथ उसके राजनीतिक सम्बन्ध नगण्य

सत्रहवीं शताब्दी में प्रकाशित तिब्बत के इतिहास 'ला इगास ऋजल रूस' से पता

चलता है कि लद्दाख और तिब्बत के बीच की सीमा दसवीं शती में भी निश्चित थी, और वह वही थी जो भारतीय नक्शों में दिखाई गई।

इसके अलावा अनेक तिब्बती ग्रन्थों, प्राचीन विवरणों, यात्रा-संस्मरणों तथा चीनी नक्शों (१७६२ में चीन में प्रकाशित 'द एनल्स ऐण्ड मैप्स ऑफ द वैस्टर्न टैरिटरीज ऑफ द एम्पायर') से यही सिद्ध होता है कि लद्दाख भारत का अभिन्न अंग रहा है। इसकी पुष्टि ईसाई पादरी इम्पोलीत डेसिडेरी (१७१५-१६), भारतीय यात्री नयन सिंह (१८७३), यूरोपीय यात्री बैलबी, कैरे (१८८५-८७), बाबर (१८६१) और गैसे (१८८५-८७) ने की है।

लद्दाख-तिब्बत सीमा की पुष्टि १६८४ और १८४२ की दो सन्धियों में हो चुकी है। १८५२ में कश्मीर के महाराजा तथा तिब्बत के प्रतिनिधियों ने जो सम झौता किया, उसमें भी इस सीमा की पुष्टि की गई थी।

भारत सरकार लद्दाख में बराबर बन्दोबस्त करती थी और लगान लेती थी। १८६०-६५ तक वहाँ लगान बन्दोबस्त किया गया था।

१६०१ तक ये इलाके सीमान्त जिले वजारत में थे। इस जिले में लद्दाख, गिलगित और बाल्तिस्तान थे। १६०१ में इस जिले को गिलगित और लद्दाख वजारतों में बाँट दिया गया। लद्दाख बजारत में स्कारदू, कारगिल और लद्दाख, तीन तहसीलें हैं। अक्साई चिन, लिपजितांग और चैंग चेनमो तथा इनके दक्षिण के स्थान लद्दाख तहसील के भाग हैं।